श्रील गुरुदेवका उपदेश

प्रतिदिन हमें अपने हृदयमें झांककर देखना चाहिए कि हम कहाँ तक श्रील रूप गोस्वामीका अनुसरण कर रहे हैं। हमें विचार करना चाहिए कि यदि मैं श्रील रूप गोस्वामीका अनुसरण नहीं कर रहा हूँ, तो मेरे जीवनको धारण करनेका वास्तवमें कोई प्रयोजन नहीं है।

विरह-विशेषांक—४

श्री श्री

भागवत पत्रिका

वर्ष—८ राष्ट्रभाषा हिन्दीमें श्रीश्रीरूप-रघुनाथकी वाणीकी एकमात्र वाहिका संख्या—(५-६)

विरह-विशेषांक—४

नित्यलीलाप्रविष्ट ॐ विष्णुपाद अष्टोत्तरशतश्री

श्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराज

॥श्रीश्रीगुरु–गौराङ्गौ जयतः॥

वर्ष ८ | श्रीगौराब्द ५२५, श्रीधर–हृषीकेश मास
वि. सं. २०६८, श्रावण–भाद्र मास; सन् २०११, १६ जुलाई–१२ सितम्बर | संख्या ५–६

विषय–सूची

विरह–विशेषांक (संख्या–४)

श्रीनारायणगोस्वामि–दशकम् ४
श्रीपाद भक्तिवेदान्त माधव महाराज

विरह–संसारिक–आसक्तिसे मुक्त करनेवाला ९
श्रीश्रीमद्भक्तिप्रज्ञान केशव गोस्वामी महाराज

श्रीगुरुके चरणोंमें [निवेदन] १३

वैष्णवों द्वारा प्रदत्त पुष्पाञ्जली–२ ..... १७

नित्यलीलाप्रविष्ट अष्टोत्तरशतश्री श्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराजके स्मरणमें दो शब्द १८
श्रीमद्भक्तिकमल पर्वत महाराज

पूज्यपाद महाराजजी–गुरुवर्गको प्रचुर आनन्द प्रदान करनेवाले २०
श्रीमद्भक्तिचकोर श्रौती महाराज

मधुररसको विशेष एवं अत्यन्त श्रेष्ठ रूपमें ग्रहण करनेवाले पूज्यपाद महाराजजी २४
श्रीपाद भक्तिवैभव सागर महाराज

अत्यधिक स्नेहशील श्रीलमहाराजजीकी कुछेक स्मृतियाँ २९
श्रीपाद रङ्गनाथ दास ब्रह्मचारी (रङ्ग बाबा)

श्रद्धा–पुष्पाञ्जलि ३२
श्रीपाद शेषशायी दास ब्रह्मचारी

श्रीमन्महाप्रभुकी वाणीके विश्वदूत–श्रील महाराजजी ३६
श्रीपाद भक्तिविदग्ध भागवत महाराज

व्रजके विख्यात सन्त एवं गणमान्यजनोंकी पुष्पाञ्जली ... ४१

श्रीनारायण महाराजजी– सच्चे सद्गुरु ४२
श्रीरमेश बाबा महाराज

नित्यलीलाप्रविष्ट अष्टोत्तरशतश्री श्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराजके प्रति सुमन श्रद्धाञ्जली ४४
श्रीयमुना प्रसाद चतुर्वेदी

पूज्य श्रीनारायण महाराजजी–व्रजकी अद्भुत विभूति ... ४८
श्रीगोपेश्वरनाथ चतुर्वेदी

वाणी–वैशिष्ट्य–सम्पद्–२ ..... ५२
[श्रील गुरुदेव और श्रील रूप गोस्वामी]

श्रील रूप गोस्वामीका वैशिष्ट्य ७८
श्रील रूप गोस्वामीका कुछ वैशिष्ट्य ८४
श्रील रूप गोस्वामिपादकी तिरोभाव–तिथि...करनेके कुछेक मुख्य उद्देश्य ९३

श्रीव्रजमण्डल परिक्रमा–२०११ ..... ९६

संस्थापक एवं नियामक

नित्यलीलाप्रविष्ट परमहंस ॐ विष्णुपाद
अष्टोत्तरशतश्री श्रीमद्भक्तिप्रज्ञान केशव गोस्वामी महाराजके

अनुगृहीत
नित्यलीलाप्रविष्ट ॐ विष्णुपाद
श्रीश्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराज

प्रेरणा-स्रोत
नित्यलीलाप्रविष्ट ॐ विष्णुपाद
श्रीश्रीमद्भक्तिवेदान्त वामन गोस्वामी महाराज

सम्पादक—श्रीमाधवप्रिय दास ब्रह्मचारी,
श्रीअमलकृष्ण दास ब्रह्मचारी

प्रचार सम्पादक—त्रिदण्डिस्वामी श्रीमद्भक्तिवेदान्त वन महाराज,
त्रिदण्डिस्वामी श्रीमद्भक्तिवेदान्त सिद्धान्ती महाराज

प्रचार सह-सम्पादिका—श्रीयुता उमा देवी दासी,
श्रीयुता सुचित्रा देवी दासी

सहकारी सम्पादक संघ—
(१) डॉ. श्रीवासुदेवकृष्ण चतुर्वेदी, पी-एच. डी., डी. लिट्. (संघपति)
(२) डॉ. श्रीअच्युतलाल भट्ट, एम. ए., पी-एच. डी.
(३) त्रिदण्डिस्वामी श्रीमद्भक्तिवेदान्त तीर्थ महाराज
(४) डॉ. (श्रीमती) मधु खण्डेलवाल, एम. ए., पी-एच. डी.
(५) श्रीपरमेश्वरी दास ब्रह्मचारी 'सेवानिकेतन'
(६) श्रीपुरन्दर दास ब्रह्मचारी 'सेवाविग्रह'

कार्याध्यक्ष—श्रीपाद प्रेमानन्द दास ब्रह्मचारी 'सेवारत्न'

कार्यकारी मण्डल—श्रीविजयकृष्ण दास ब्रह्मचारी, श्रीगौरराजदास ब्रह्मचारी, श्रीप्राणकृष्णदास ब्रह्मचारी, श्रीमदनमोहनदास ब्रह्मचारी, श्रीदामोदरदास ब्रह्मचारी, श्रीसञ्जय दास ब्रह्मचारी, श्रीजगदीशप्रसाद दासाधिकारी, भक्त सोनु

ले-आउट और डिजाइन—श्रीकृष्णकारुण्य दास ब्रह्मचारी, श्रीअनुपम दास

प्रकाशक—त्रिदण्डिस्वामी श्रीमद्भक्तिवेदान्त माधव महाराज

श्रीकेशवजी गौड़ीय मठ
जवाहर हाट, मथुरा-२८१००१ (उ. प्र.)
दूरभाष : 08791273306

श्रीगौड़ीय वेदान्त समिति ट्रस्टकी ओरसे
त्रिदण्डिस्वामी श्रीमद्भक्तिवेदान्त माधव महाराज द्वारा
श्रीकेशवजी गौड़ीय मठ, जवाहर हाट, मथुरासे प्रकाशित।

Visit us at:
www.bhagavatpatrika.com
e-mail:
mathuramath@gmail.com,
vijaykrsnadas@gmail.com

विरह-विशेषांक
(संख्या-४)

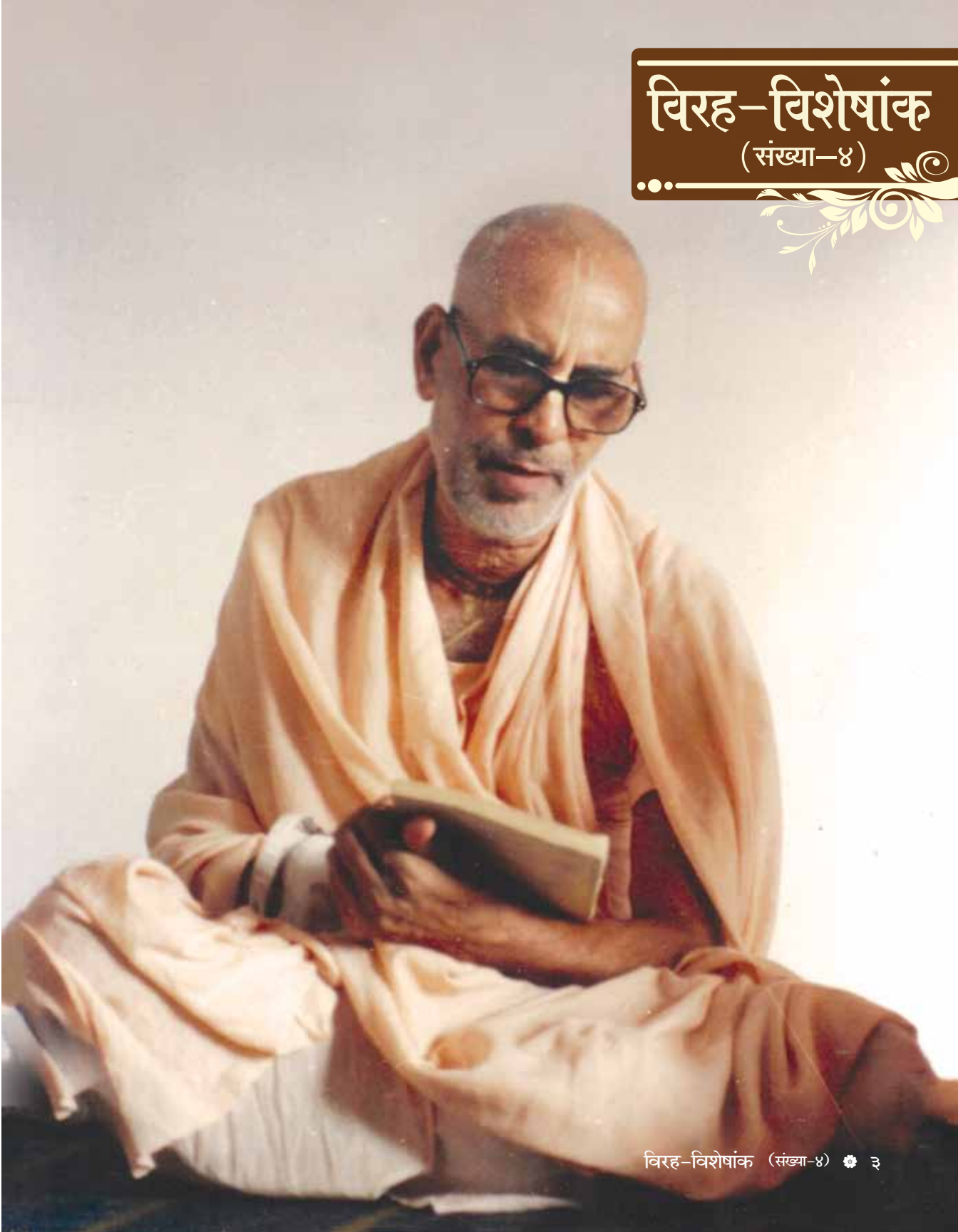

श्रीनारायणगोस्वामि–

श्रीपाद भक्तिवेदान्त माधव महाराज

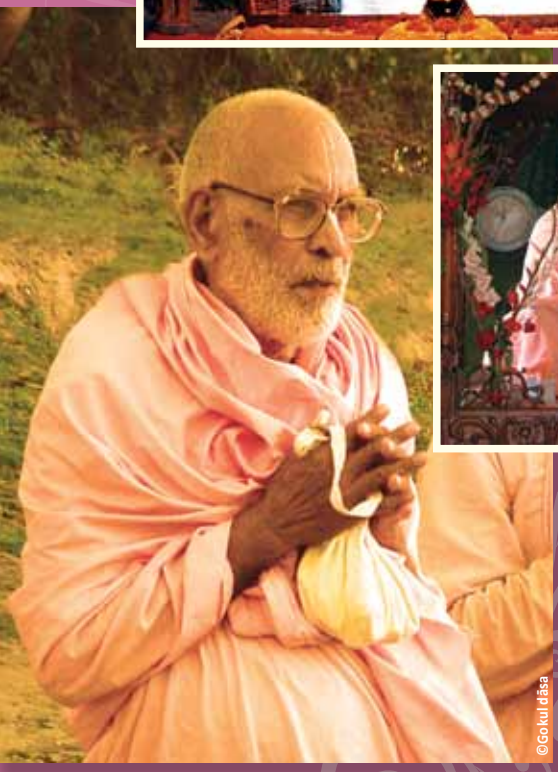

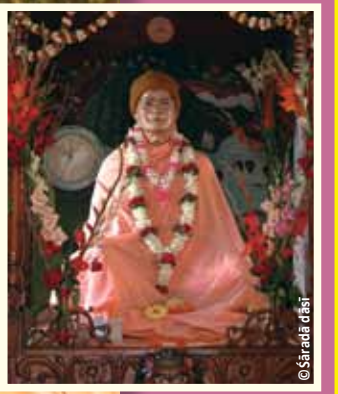

सद्भक्तसंराधितरागमार्ग–
प्रवर्तकं गौरजनं महान्तम्।
श्रीकेशवेष्टं वरदं वरेण्यं
नारायणं विश्वगुरुं नमामि॥१॥

कलियुगमें सत्भक्तजनोंके द्वारा संराधित या उपासित रागमार्गके प्रवर्तक, श्रीशचीनन्दन गौरहरिके निजजन, महानतम, श्रीकेशवदेव अथवा श्रील भक्तिप्रज्ञान केशव गोस्वामी महाराजजी जिनके इष्टदेव हैं, उन वरदाता, वरेण्य, जगद्गुरु श्रील भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराजको मैं प्रणाम करता हूँ॥१॥

–दशकम्

संकीर्तितं गौरहरे वाणी
त्रिविक्रमे वामनाप्तसख्यम्।
श्रीमद्युगाचार्यपदेन युक्तं
नारायणं विश्वगुरुं नमामि॥२॥

श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर प्रभुपादके द्वारा विशेष रूपमें कीर्तित गौरवाणीका देश–विदेशमें विस्तार करनेवाले, अपने सतीर्थ श्रील भक्तिवेदान्त वामन गोस्वामी महाराजजी एवं श्रील भक्तिवेदान्त त्रिविक्रम गोस्वामी महाराजजीके प्रति सख्यभावसे युक्त, व्रजवासी विद्वद्जनों द्वारा प्रदत्त युगाचार्य पदवीसे विभूषित, जगद्गुरु श्रील भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराजजीको मैं प्रणाम करता हूँ॥२॥

श्रीगौरकृष्णैकप्रियं धरण्यां
प्रसारितं भक्तिविनोदधारम्।
विस्तारकं विश्वपते हार्द्यं
नारायणं विश्वगुरुं नमामि॥३॥

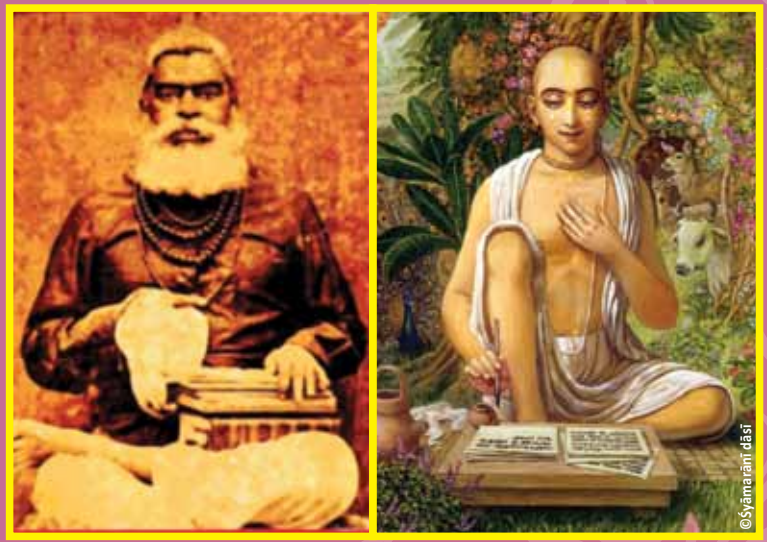

युगपत् श्रीगौर तथा श्रीकृष्णके प्रेष्ठजन (प्रियजन), पृथ्वीपर श्रीभक्तिविनोद धाराको प्रवाहित एवं प्रचारित करनेवाले, श्रील विश्वनाथ चक्रवती ठाकुरके हृदयस्थित रसका विश्वमें विस्तार करनेवाले, जगद्गुरु श्रील भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराजको मैं प्रणाम करता हूँ॥३॥

विरह—संसारिक-आसक्तियोंसे मुक्त करनेवाला

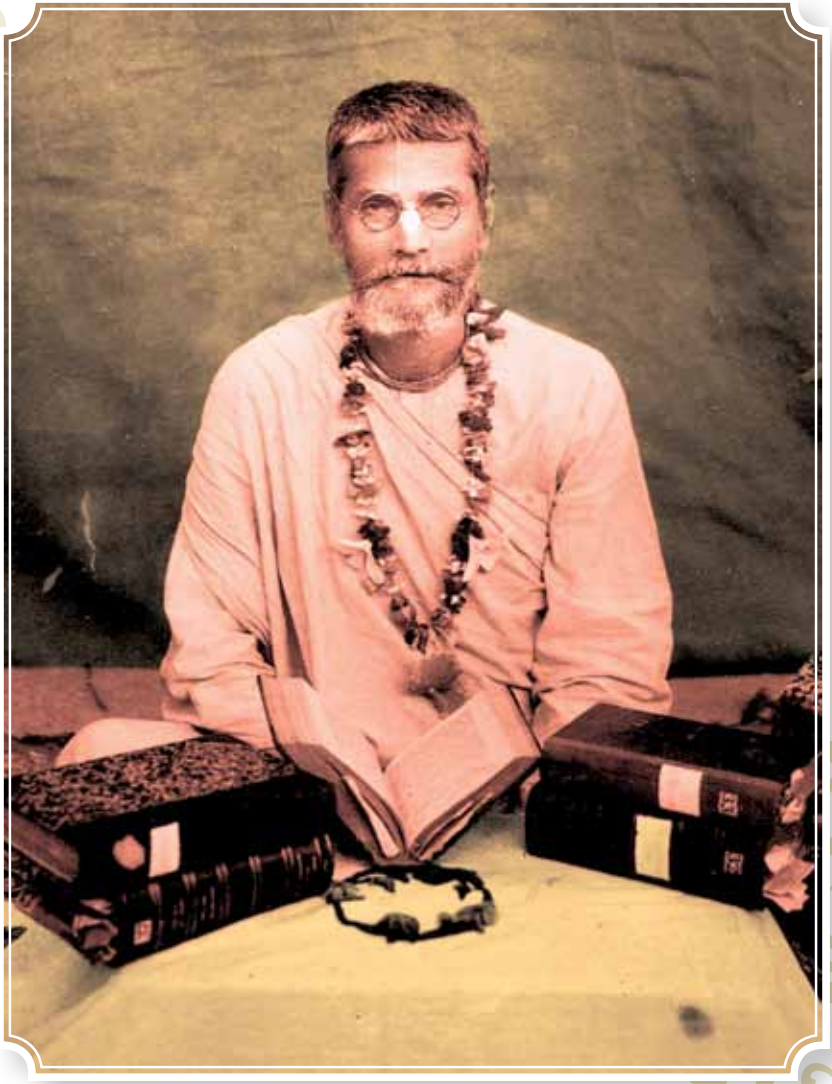

श्रीश्रीमद्भक्तिप्रज्ञान केशव गोस्वामी महाराज

[श्रील भक्तिविनोद ठाकुरकी विरह-तिथि १७/७/१९५१, श्रीउद्धारण गौड़ीय मठ, चुँचुड़ामें प्रदत्त वक्तृताके कुछेक अंश]

महापुरुषोंकी जीवनी ही एक–एक धर्मशास्त्र ग्रन्थ हैं, क्योंकि साधु–शास्त्र एवं गुरुके वचनोंका अनुसरण करते हुए ही उनका जीवन यापन होता है।

शास्त्रोंमें अप्राकृत वाणीकी पुनः पुनः चर्चा करनेका निर्देश

हमलोग प्रति वर्ष ही श्रील ठाकुर भक्तिविनोदकी तिरोभाव–तिथिका पालन करते हैं एवं आप लोगोंको उसमें योगदान करनेके लिये आह्वान करते हैं। विरह–तिथि या तिरोभाव–तिथि किसे कहा जाता है, इसका तात्पर्य क्या है, तथा ऐसी तिथियोंका पालन क्यों किया जाता है–इन विषयोंको हम प्रत्येक वर्ष चर्चा करते हुए श्रवण किया करते हैं। इन सब कथाओंकी पुनरावृत्ति होनेपर भी वह कथाएँ पुरानी नहीं हो जाती। शास्त्रोंमें अप्राकृत वाणीकी पुनः पुनः चर्चा करनेका ही निर्देश है–**"आवृत्तिरसकृदुपदेशात्"** (वेदान्त सूत्र ४/१/१) अर्थात् पुनःपुनः श्रवण–कीर्त्तनादिकी आवश्यकता है।

वैष्णवोंकी विरह–तिथिको पालन करनेका उद्देश्य

मिलनके अभावमें ही विरहकी उत्पत्ति होती है। साधारणतः विरहका अर्थ विच्छेद होता है। जगतकी एक वस्तुसे अन्य वस्तुको अलग कर देनेसे जो विच्छेद होता है, वह किन्तु 'विरह' नहीं है। यद्यपि उस विच्छेदको बहुत बार 'विरह' कहकर ही उल्लेख होते देखा जाता है, किन्तु इस जागतिक विरह या विच्छेदके फलस्वरूप हम शोक–मोह जैसे एक भावको ही लक्ष्य करते हैं। शोक–मोह हमें संसारमें आसक्त कर देता है, किन्तु विरह हमें संसारिक–आसक्तिसे मुक्ति प्रदान करके भगवान्‌की सेवामें निष्ठा प्रदान करता है। इसलिए हम वैष्णवोंकी विरह–तिथि पालन किया करते हैं। आप सभीके हृदयमें यही भाव जागृत हो–यही श्रील भक्तिविनोद ठाकुरके निकट प्रार्थना है।

विरहको जागृत करनेकी विधि

किसी वस्तुके विषयमें जिसका जितना ज्ञान होता है, उसमें उतना ही विरह जागृत होता है। वस्तुके ज्ञानका अभाव होनेपर विरह सम्भवपर ही नहीं है। जिसके विषयमें 'विरह', यहाँ उसीको ही 'वस्तु' कहा जा रहा है–ऐसा समझना चाहिए। अतः श्रील भक्तिविनोद ठाकुरके सम्बन्धमें हमें वास्तविक ज्ञान नहीं होनेपर हमारा उनके विषयमें विरह जागृत नहीं हो सकता। वस्तुका ज्ञान ही मिलन है, उस वस्तुके हृदयमें सम्मिलित नहीं होनेपर उस वस्तुसे विरह सम्भवपर ही नहीं है। जिससे कि हम श्रीलभक्तिविनोद ठाकुरके सम्बन्धमें वास्तविक ज्ञान प्राप्त कर पायें, इसलिए ही प्रत्येक वर्ष हम उनकी जीवनीकी चर्चा किया करते हैं।

श्रीगुरुके चरणोंमें [निवेदन]

(कबे) रुद्ध हृदय–कपाट खुलिया।
(ताहे) तोमार आसन पातिब॥१॥

[पदकर्त्ता अपने श्रीगुरुदेवके चरणकमलोंमें प्रार्थना करते हुए कह रहे हैं कि हे गुरुदेव!] कब ऐसा दिन आयेगा जब मैं अपने हृदयके बन्द कपाटको खोलकर वहाँ आपके लिए आसन बिछाऊँगा॥१॥

(कबे) संसारसुख–वासना भुलिया।
(गुरु) तोमार–सेवासुखे मातिब॥२॥

हे गुरुदेव! कब मैं संसारसुखकी वासनाको भूलकर आपके सेवासुखमें मत्त हो जाऊँगा॥२॥

(कबे) जड़ आकांक्षासमूह फेलिया।
(नाथ) अप्राकृत आशा पोषिब॥३॥

(कबे) ऐ श्रीचरणे आमारे फेलिया।
(प्रभो) तव यश विश्वे घोषिब॥४॥

हे नाथ! कब मैं अपनी समस्त जड़ आकांक्षाओंका त्यागकर, अप्राकृत आशाका पोषण करते हुए आपके

वैष्णवों द्वारा प्रदत्त पुष्पाञ्जली—२

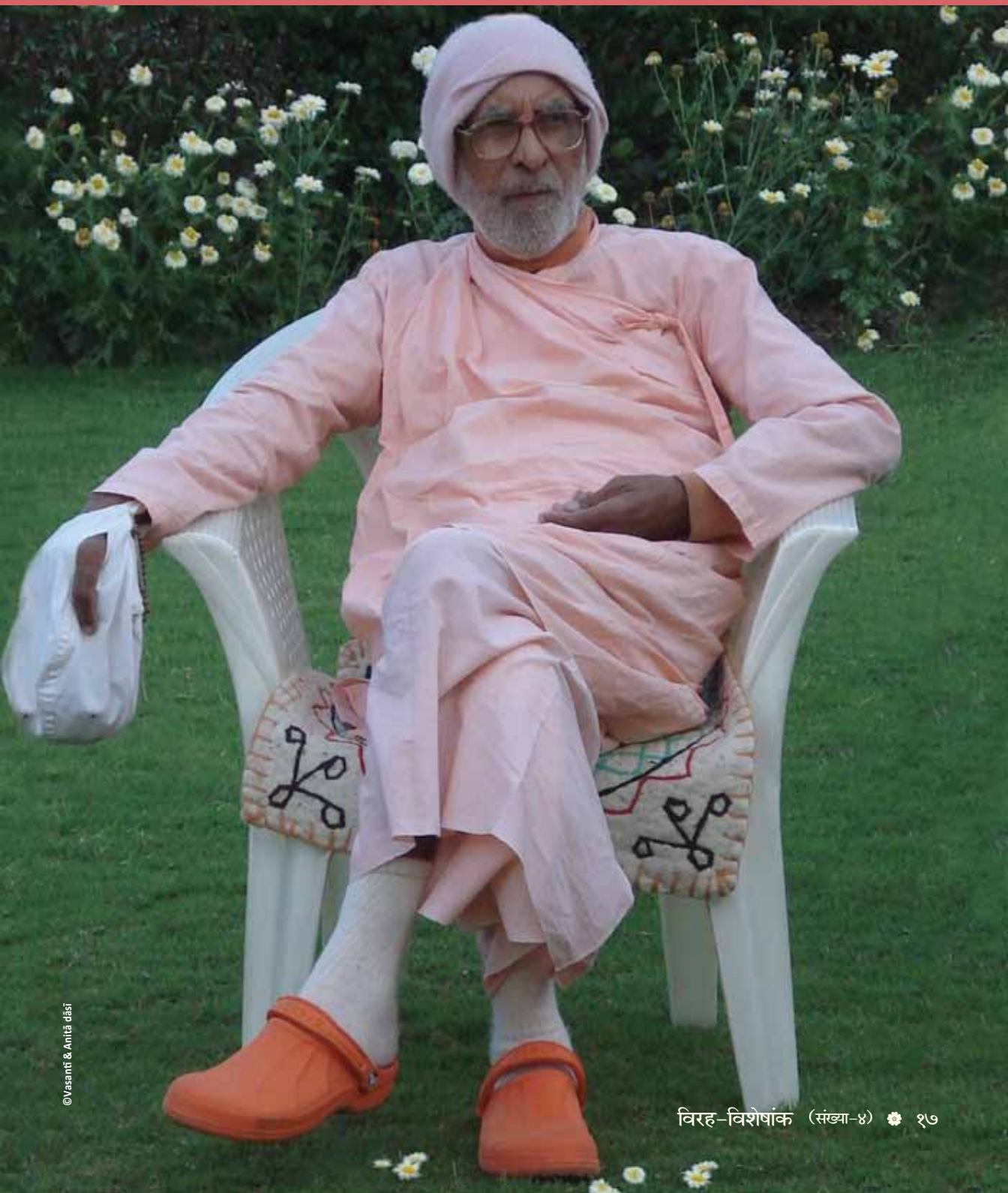

©Vasanti & Anitā dāsī

नित्यलीलाप्रविष्ट अष्टोत्तरशतश्री गोस्वामी महाराजके स्मरणमें

अतुलनीय कीर्तिमान स्थापित करनेवाले पूज्यपाद महाराजजी

भारत तथा विदेशोंमें श्रीगौड़ीय–सम्प्रदायके विशेष वैष्णव–सन्त श्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण महाराजजीने विश्वमें श्रीसनातन गौड़ीय–सम्प्रदायकी महिमा एवं श्रीश्रीगौर–नित्यानन्दकी अप्राकृत–लीलाओंका प्रचार करके विश्वमें एक अतुलनीय कीर्तिमान स्थापित किया है।

मेरे श्रीगुरुपादपद्म नित्यलीलाप्रविष्ट ॐ विष्णुपाद अष्टोत्तरशतश्री श्रीमद्भक्तिसारङ्ग गोस्वामी महाराज १९३७ ई॰ में अपने गुरुदेव नित्यलीलाप्रविष्ट ॐ विष्णुपाद अष्टोत्तरशतश्री श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती गोस्वामी प्रभुपादकी आज्ञासे लन्दन आदि विदेशोंमें श्रीगौर–वाणीके प्रचारके लिए गए थे और कुछ समय तक लन्दनमें अप्राकृत श्रीगौर–वाणी का प्रचार करके उन्होंने एक आलोड़न कर दिखलाया था। तदुपरान्त श्रील प्रभुपादके अप्रकटका संवाद प्राप्त कर श्रील गुरुदेव तुरन्त भारत लौट आये थे।

उसके बाद कुछ अन्य गौड़ीय वैष्णव–सन्त भी विदेशोंमें प्रचार करनेके लिए गए जिनमें प्रमुख हैं श्रीश्रीमद्भक्तिवेदान्त स्वामी महाराजजी। यद्यपि श्रील स्वामी महाराजने विश्वमें विपुलरूपसे श्रीगौर–वाणीका प्रचार किया, परन्तु उनके शिष्यवृन्द श्रीगौड़ीय–सम्प्रदायके विचार–आचारको केवल अपने अधिकारानुसार ही अपना पाये।

पूज्यपाद महाराजका प्रचार–अविस्मरणीय

इसी कड़ीमें पूज्यपाद भक्तिवेदान्त नारायण महाराजजीने जिस प्रकार गौड़ीय–सम्प्रदायके प्रचारको विश्वके सभी देशोंमें आँधीकी तरह फैलाया, वह अविस्मरणीय है।

श्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण

दो शब्द

–श्रीमद्भक्तिकमल पर्वत महाराज

अविस्मरणीय इसलिये कहा क्योंकि उन्होंने प्रचारके साथ–साथ गौड़ीय–आचारका प्रभाव भी सर्वत्र छोड़ा है। इसी आचार–प्रचारके फलस्वरूप विदेशोंसे उनके साथ बहुत–बहुत शिष्य आये और उनके मठोंमें सेवामें संलग्न हो गए।

पूज्यपाद महाराजजीसे मेरा सम्बन्ध

पूज्यपाद नारायण महाराजजीके साथ मेरा परिचय बहुत पुराना है। मेरे गुरुपादपद्म नित्यलीलाप्रविष्ट ॐ विष्णुपाद अष्टोत्तरशत श्रीश्रीमद्भक्तिसारङ्ग गोस्वामी महाराजने जब मुझे श्रीइन्द्रप्रस्थ गौड़ीय मठ, मल्कागंज, दिल्लीका निर्माण आदि सेवाभार सौंपा था, उस समय मैंने गुरुदेवकी कृपासे सम्पूर्ण मठ निर्माणकर श्रीमूर्ति प्रतिष्ठा उत्सवके उपलक्ष्यमें श्रीइन्द्रप्रस्थ गौड़ीय मठमें चार दिन की धर्मसभाओंका आयोजन किया था। इस सेवाके लिए मैंने मथुरामें स्थित श्रीकेशवजी गौड़ीय मठसे श्रीपाद नारायण महाराजजीको दिल्ली लाकर श्रीइन्द्रप्रस्थ मठमें ठहराया और उन्हींके निर्देशानुसार ये सभी उत्सव और धर्म सभादि आयोजन सेवाएँ सम्पन्न की।

पूज्यपाद महाराजजीका स्नेह–वात्सल्य अकल्पनीय

पूज्यपाद नारायण महाराजने मुझे अपना छोटा भाई मानकर मुझे जो स्नेह–वात्सल्य और प्रीति दी है वह अकल्पनीय है। जब भी मैं दिल्लीसे मथुरा उनसे मिलने

जाता तो वह अपना सारा कार्य छोड़कर मेरा आदर–सत्कार और मुझसे प्रीति करते थे और मुझे अपने साथ बिठाकर प्रसाद सेवा कराते। मठकी सेवा, पुस्तक–पत्रिका आदिका प्रकाशन, प्रचार करनेका उत्साह देकर वे सर्वदा मुझे भक्तिराज्यमें अग्रसर करते थे।

उनके निःस्वार्थ भावको समझना और समझाना बहुत कठिन है। मैं सदैव उनके स्नेह और प्रीतिको स्मरण करता रहूँगा और प्रार्थना करूँगा कि वे नित्यधामसे मुझे अपना आशीर्वाद देते रहें।

[श्रीमद्भक्तिकमल पर्वत महाराज नित्यलीलाप्रविष्ट ॐ विष्णुपाद श्रीश्रीमद्भक्तिसारङ्ग गोस्वामी महाराजजीके शिष्य हैं। इन्होंने बहुत समय तक अपने गुरुदेवके निर्देश अनुसार दिल्लीमें प्रचार–सेवा की और वर्तमानमें मथुरामें रहकर भजन कर रहे हैं।]

पूज्यपाद गुरुवर्गको

पूज्यपाद महाराज–सेवकोंके सेवाके उत्साहको वर्धित करनेवाले

पूज्यपाद श्रीश्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराज किस प्रकारके निर्लिप्त और निस्वार्थ वैष्णव थे, यह सोचकर नेत्रोंमें आँसू भर आते हैं। उन्हें श्रीश्रीराधागोविन्दकी नित्य–लीलामें गए हुए आज प्रायः ८–९ मास हो गए हैं, किन्तु उनकी स्मृति अब भी भूल नहीं पा रहा हूँ। मेरे प्रति उनका स्नेह दो–चार वर्षका नहीं है। आजसे लगभग पचास वर्षसे अधिक हुए हैं कि जब मेरे परमाराध्य गुरुदेव नित्यलीलाप्रविष्ट ॐ विष्णुपाद अष्टोत्तरशत श्रील भक्तिसारङ्ग गोस्वामी महाराजने दिल्लीमें श्रीइन्द्रप्रस्थ गौड़ीय मठ स्थापित किया था। उस मठके स्थापन–उत्सवके समय पूज्यपाद भक्तिवेदान्त नारायण महाराजने भी आमन्त्रित होकर योगदान दिया था। उनके साथ श्रीपाद शेषशायी ब्रह्मचारी आदि अन्य वैष्णवगण भी आये थे। तब मुझे मठमें रहते हुए पाँच वर्ष हो गये थे। श्रीश्रीगुरुगौराङ्गकी कृपासे मुझमें सेवा करनेका बहुत उत्साह था। उस उत्सवमें श्रीधाम वृन्दावनसे बहुतसे

महाराजजी—
प्रचुर आनन्द प्रदान करनेवाले

—श्रीमद्भक्तिचकोर श्रौती महाराज

प्राचीन वैष्णव भी आये थे। उन लोगोंके प्रसादकी व्यवस्था करनेका दायित्व मेरे ऊपर था। पूज्यपाद श्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण महाराजने मेरे सेवा करनेके उत्साह एवं सेवामें व्यस्तताको देखकर अपने साथ आये हुए ब्रह्मचारियोंको मेरी सहायता करनेके लिए नियुक्त कर दिया। हम दोनों (शेषशायी प्रभु और मैं) एक ही आयुके थे। एक ही आयुके बान्धवका साथ मिलनेसे मेरा सेवा करनेका उत्साह और भी अधिक बढ़ गया। चार दिनका उत्सव अत्यन्त आनन्दसे बीता।

गुरुवर्गको प्रचुर आनन्दित करनेवाले

उत्सवके उपलक्ष्यमें हुई धर्मसभामें पूज्यपाद नारायण महाराजकी वक्तृता सुनकर मेरे गुरुपादपद्म श्रीश्रीमद्भक्तिसारङ्ग गोस्वामी महाराज, श्रील भक्तिवेदान्त स्वामी महाराज एवं श्रीमद्भक्तिसौरभ सार महाराज प्रचुर आनन्दित हुए थे। पूज्यपाद नारायण महाराज हिन्दीभाषी होनेपर भी बीच–बीचमें बंगला एवं अंग्रेजी बहुत अच्छी तरह बोलते थे। उस दिनसे ही पूज्यपाद

नारायण गोस्वामी महाराजके प्रति मेरी स्वाभाविक भक्ति हो गयी। जब–जब उनसे भेंट होती, तब वे मुझे भजनके लिए उपदेश देते थे।

आचार और प्रचार—दोनों कार्योंमें परम निपुण

एक ओर जिस प्रकार पूज्यपाद नारायण महाराज योग्य प्रचारक थे, उसी प्रकार दूसरी ओर वे भजनानन्दी भी थे। श्रील सनातन गोस्वामीने नामाचार्य श्रील हरिदास ठाकुरको कहा है (चै॰ च॰ अन्त्य ४/१०३)—"**आचार प्रचार नामे करह दुई कार्य। तुमि सर्वगुरु तुमि जगतेर आर्य॥** अर्थात् तुम नाम–भजनका आचरण और नाम प्रचार—दोनों कार्य करते हो, इस प्रकार तुम सर्वश्रेष्ठ भक्त होनेके कारण सबके गुरु हो।"

मधुररसको विशेष एवं रूपमें ग्रहण करनेवाले

[१/१/२०११ को श्रीश्रीकेशवजी गौड़ीय मठ, नवद्वीपमें आयोजित विरह-सभामें प्रदत्त वक्तृताके कुछ अंश]

अत्यन्त श्रेष्ठ पूज्यपाद महाराजजी

–श्रीपाद भक्तिवैभव सागर महाराज

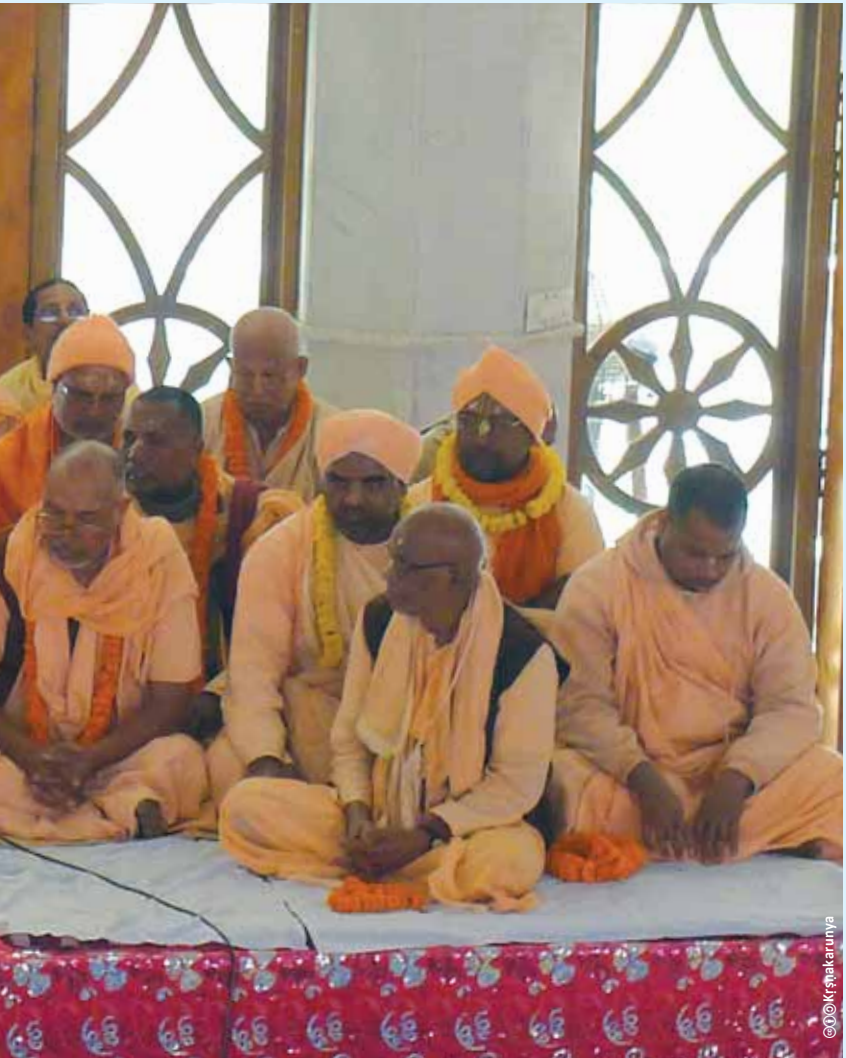

मङ्गलाचरण

परम करुणामय, मदीश्वर नित्यलीलाप्रविष्ट ॐ विष्णुपाद श्रीश्रीमद्भक्तिविलास तीर्थ गोस्वामी गुरु महाराजके श्रीचरणोंकी वन्दना करते हुए परमाराध्यतम परमगुरुदेव जगद्गुरु नित्यलीलाप्रविष्ट ॐ विष्णुपाद श्रीश्रीमद्भक्तिसिद्धान्त सरस्वती गोस्वामी प्रभुपादके चरणकमलोंमें प्रणत होकर उनके कृपा–आशीर्वादकी प्रार्थना करता हूँ। मैं अपने शिक्षागुरु श्रीश्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराजके चरणोंमें प्रणत होता हूँ। वे कृपापूर्वक मेरे प्रति प्रसन्न हों। उपस्थित त्रिदण्डिपादगण, वैष्णवमण्डली, मातृमण्डली, सज्जनवृन्द आप सभी इस कङ्गालकी दण्डवत् प्रणति स्वीकार करें।

अत्यधिक स्नेहशील श्रील महाराजजीकी कुछेक स्मृतियाँ

–श्रीपाद रङ्गनाथ दास ब्रह्मचारी (रङ्ग बाबा)

गुरुदेवके आदेशका सुष्ठुरूपसे पालन करनेवाले

श्रीगुरु महाराज नित्यलीलाप्रविष्ट ॐ विष्णुपाद श्रीश्रीमद्भक्तिप्रज्ञान केशव गोस्वामी महाराजने पूज्यपाद नारायण महाराजको जो–जो आदेश दिया था, उन्होंने उन–उन आदेशोंका सम्पूर्ण रूपमें पालन किया है। श्रील गुरु महाराजने पूज्यपाद नारायण महाराजको मथुरा मठके संचालनका भार सौपा, जो उन्होंने बहुत सुष्ठु रूपमें निभाया और अपने आश्रितजनों और शिष्योंको अच्छी शिक्षा प्रदान की। वे मुझे भी बहुत स्नेह करते थे।

श्रद्धा–पुष्पाञ्जलि

–श्रीपाद शेषशायी दास ब्रह्मचारी

आविर्भाव, दीक्षा, संन्यास एवं गुरुसेवा

ॐ विष्णुपाद श्रीश्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराजका शुभाविर्भाव १९२१ ई॰ में मौनी अमावस्याके दिन ब्रह्ममुहूर्तमें बिहारके बक्सर जिलेके तिवारीपुर नामक ग्राममें हुआ था। इनके माता–पिता दोनों ही श्रीसम्प्रदायके दीक्षित वैष्णव थे। बाल्यकालसे ही इनकी सद्धर्ममें रुचि थी। संसारसे अत्यन्त तीव्र वैराग्य होनेके कारण इन्होंने सन् १९४७ ई॰ में गौड़ीय मठोंके संस्थापक आचार्य नित्यलीलाप्रविष्ट ॐ विष्णुपाद श्रीश्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर प्रभुपादके अन्तरंग पार्षद नित्यलीलाप्रविष्ट ॐ विष्णुपाद श्रीश्रीमद्भक्तिप्रज्ञान केशव

श्रीमन्महाप्रभुकी वाणीके श्रील महाराजजी

[श्रीगिरिधारी गौड़ीय मठ, गोवर्धनमें ९/१/२०११ को आयोजित विरह–सभामें प्रदत्त पुष्पाञ्जली]

विश्वदूत—

—श्रीपाद भक्तिविदग्ध भागवत महाराज

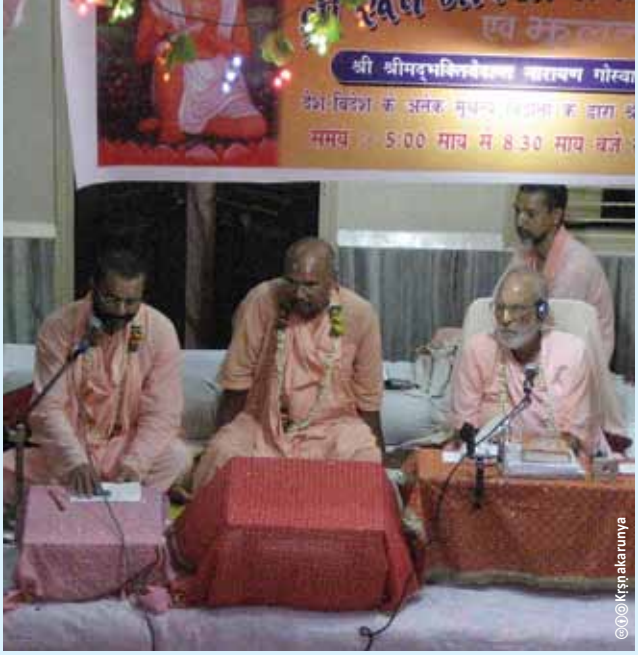

मंगलाचरण

सर्वप्रथम श्रीभगवत् सम्बन्धज्ञान प्रदाता परमाराध्यतम श्रील गुरु महाराज नित्यलीलाप्रविष्ट ॐ विष्णुपाद अष्टोत्तरशतश्री श्रीमद्भक्तिप्रमोद पुरी गोस्वामी महाराजजीके चरणोंमें प्रणत होकर उनकी अहैतुकी कृपा एवं आशीर्वादकी याचना करता हूँ। सपार्षद जगद्गुरु श्रील प्रभुपादकी चरणवन्दनाकर और जिनके विरह–महोत्सवके उपलक्ष्यपर हम सभी एकत्रित हुए हैं उन नित्यलीलाप्रविष्ट पूज्यपाद श्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराजजीकी चरणवन्दना कर उनकी अहैतुकी कृपा एवं आशीर्वादकी प्रार्थना करता हूँ।

श्रील महाराज—'मानद' धर्ममें सुप्रतिष्ठित एवं प्रचार–सेवा हेतु सदैव उत्साह प्रदान करनेवाले

पूज्यपाद श्रील महाराजजी कई वर्षोंसे श्रीरूप–सनातन गौड़ीय मठमें श्रील रूप गोस्वामीकी विरह–तिथिके उपलक्ष्यमें मुझे बुलाते थे। वे मुझे स्नेह करते थे, योग्यता नहीं रहनेपर भी मुझे अपने पास बैठाते थे, नीचे नहीं बैठने देते थे। वे सब समय मुझे प्रोत्साहित करते थे कि प्रचार कभी भी बन्द नहीं करना, प्रचार अवश्य करते रहना। परन्तु अब हमें दिशा–निर्देश देनेवाले गुरुवर्गके चले जानेके बाद हमारे ज्येष्ठगुरुभ्राता—पूज्यपाद महाराजजीके भी चले जानेके बाद प्रचार करनेके लिए जो उत्साह है, वह लगता है कि अभी कुछ घट गया है। मैं तो अपने लिए ऐसा ही अनुभव करता हूँ। हमारे पूजनीय, आदरणीय एवं वन्दनीयके रूपमें पूज्यपाद महाराजजी हमारी स्मृतिमें सब समय ही रहेंगे। प्रचार करने हेतु जानेपर भी ऐसे व्यक्तित्वका अभाव हमें हर पग–पगपर अनुभव होता रहेगा।

श्रील प्रभुपादकी परम्पराके विचारोंकी रक्षा करनेवाले

श्रील नारायण महाराजजीके जानेके बाद अब कोई सिद्धान्तका विरोध होगा, तो हम किसके पास जायेंगे? कुछ वर्ष पहले की एक घटनाको मैं संक्षेपमें ही बताऊँगा। कुछ गौड़ीय–नामधारी व्यक्ति गौड़ीय–मठके सम्बन्धमें सब समय कुछ–न–कुछ बातें उठाते ही रहते थे। पूज्यपाद महाराजजीने बड़े कड़े शब्दोंमें शास्त्रीय सिद्धान्तोंसे श्रील प्रभुपादकी धाराके विचारोंकी रक्षा करते हुए उनके प्रतिवादमें 'प्रबन्ध–पञ्चकम्' नामक पुस्तक के रूपमें उत्तर प्रदान किया था, किन्तु वे नामधारी–गौड़ीय इसका कोई प्रत्युत्तर नहीं दे पाये, और उस पुस्तकने उन नामधारी गौड़ीय–वैष्णवोंके मनमें हलचल मचा दी।

व्रजके विख्यात सन्त एवं गणमान्यजनोंकी पुष्पाञ्जली

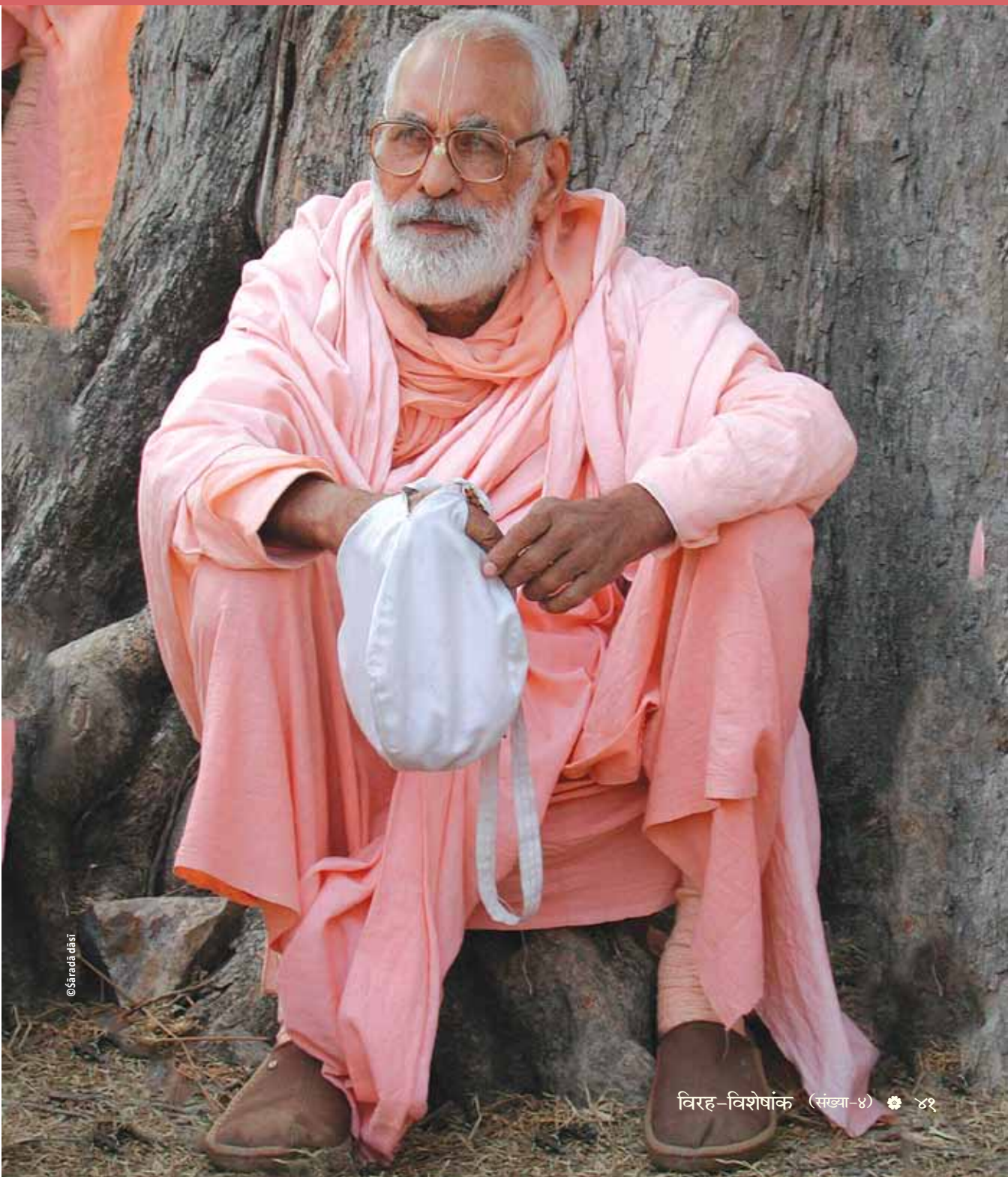

©Śāradā dāsī

श्रीनारायण महाराजजी—सच्चे सद्गुरु

—श्रीरमेश बाबा महाराज[१]

श्रीमान मन्दिर सेवा—संस्थान ट्रस्ट

मान मन्दिर,
गह्वरवन, बरसाना,
जिला—मथुरा २८१४०५
उत्तर प्रदेश, भारत

तिथि—२० अगस्त २०११

केवल सत्सङ्गसे ही निर्भयताकी प्राप्ति

इस संसारमें अन्धा अन्धेका गुरु बन रहा है। वास्तवमें सद्गुरु कहीं दिखलाई ही नहीं पड़ते। बिना सद्गुरुके किसीका भी कल्याण सम्भव नहीं है। जीव अनादि कालसे भगवान्‌से विमुख हैं। जीवको सदा मृत्यु—शोकादि अनेक प्रकारके तापोंका भय बना ही रहता है। ऐसे भय प्रदान करनेवाले संसारमें निर्भयता मिले कैसे? निर्भयताको यदि कोई ज्ञानके बलपर प्राप्त करना चाहे, तो वह असम्भव है। ब्रह्माजी जिनकी आयु दो परार्द्ध है, वे भी अभयपद देनेमें समर्थ नहीं हैं। संसारमें कहीं निर्भयता नहीं है। किसी भी योनिमें चले जायें, निर्भयता नहीं है, यदि है तो केवल महापुरुषोंके पास। उनके पास जाकर सत्संग करनेसे वह निर्भयपद सहज ही प्राप्त हो जाता है। आत्यन्तिक क्षेम अर्थात् सम्पूर्ण मङ्गल केवल साधु—सन्त ही दे सकते हैं।

महापुरुषोंके प्रति शरणागति ही भवसागरसे पार होनेका एकमात्र उपाय

व्रज सदासे सत्पुरुषों, सन्त—महात्माओंकी पावन भूमि रहा है। इसी व्रजमें अपने अलौकिक ज्ञानकी आभासे लाखों जीवोंको निर्भयताकी ओर अग्रसर करनेवाले परमपूज्य सन्तप्रवर श्रीनारायण महाराजजी वास्तवमें सच्चे सद्गुरु रहे जो आज श्रीराधामाधवके नित्य—लीला धाममें जानेके पश्चात् भी सभीके हृदयमें विराजमान हैं। ऐसे वीतराग (विषयासक्ति शून्य) महापुरुषके प्रति शरणागति जीवको सहजमें ही भवसागरसे पार करा देती है। ब्रह्मा—शंकर तक भी बिना सद्गुरुके पार नहीं पा सकते। स्वयं भगवान् श्रीकृष्णने शंकरजीको युगलमंत्रका उपदेश दिया और ब्रह्माजीको वेदका ज्ञान दिया।

---

१ श्रीरमेश बाबा महाराज द्वारा कथित विषय वस्तु उनके सचिव—सेवक राधाकान्त शास्त्री द्वारा लिखी गयी है

नित्यलीलाप्रविष्ट अष्टोत्तरशतश्री गोस्वामी महाराजके प्रति सुमन

श्रीगौड़ीय–सम्प्रदायके आचार्योंके साथ मेरे पूर्वजोंका सम्बन्ध

मथुरा व्रजतीर्थमें हमारा घर बड़े चौबेजीके घरके नामसे जाना जाता है। हमारे पूर्वज वेदनिष्ठ श्रीउजागर चौबेजी थे जो बावन (५२) राजाओं तथा चारों सम्प्रदायके तीर्थ पुरोहित थे। हमारे वंशज लगभग ५०० वर्षोंसे तीर्थ पुरोहितका काम करते आ रहे हैं। मध्व–सम्प्रदायके अन्तर्गत श्रीगौड़ीय–सम्प्रदायमें श्रीचैतन्य महाप्रभु प्रकट हुए जो साक्षात् श्रीकृष्ण हैं। उसी समय श्रील रूप गोस्वामी, श्रील सनातन गोस्वामी आदि छः गोस्वामियोंका प्रादुर्भाव हुआ था। उन सभीने हमारे पूर्वज बड़े चौबे श्रीउजागर चौबेजीको मथुरा–मण्डलके तीर्थ पुरोहितके रूपमें वरण किया था। तत्पश्चात् सन् १९३२ में श्रीगौड़ीय–सम्प्रदायके संरक्षक ॐ विष्णुपाद परमहंस श्रीमद्भक्तिसिद्धान्त सरस्वती गोस्वामी मथुरा–व्रजमण्डलकी चौरासी कोसकी यात्रा करने हेतु मथुरा पधारे। उस समय हमारे पिता

श्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण श्रद्धाञ्जली

श्रीयमुना प्रसाद चतुर्वेदी
(बड़े चौबे, तीर्थ पुरोहित, मथुरा)

श्रीमद्भक्तिसिद्धान्त सरस्वती महाराजके साथ श्रीगिरि महाराज, श्रीतीर्थ महाराज, श्रीभागवत महाराज, श्रीबोधायन महाराज, श्रीअतुलचन्द, श्रीकुञ्जबाबु आदि (जिन्होंने खातेमें हस्ताक्षर किया है) बहुतसे भक्त भी यात्रामें पधारे थे।

श्रीगोपालचन्दजी (पुत्र श्रीवृन्दावनचन्द्रजी) ने मथुराके मुख्य–तीर्थ विश्रामघाटपर श्रीमद्भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर प्रभुपादजीकी व्रजमण्डल परिक्रमाकी यात्राका संकल्प और श्रीयमुनाजीका पूजन आदि कार्य कराये तथा उनके साथ रहकर व्रजमण्डल चौरासी कोसकी यात्रा कराई। इस यात्राका विवरण हमारे तीर्थ पुरोहताईके खातेमें उपलब्ध है। उसी समयसे हमारा तथा श्रीगौड़ीय–सम्प्रदायके आचार्योंका सम्बन्ध चला आ रहा है। ॐ विष्णुपाद परमहंस

महाराजश्रीके अप्राकृत स्नेहकी कुछेक स्मृतियाँ

सन् १९५४ में त्रिदण्डिस्वामी श्रीश्रीमद्भक्तिप्रज्ञान केशव गोस्वामी महाराज व्रजयात्रा हेतु पधारे थे। उन्हींके साथ श्रीभक्तिवेदान्त नारायण महाराज भी यात्रामें उपस्थित थे। उसी समय महाराजजीसे मेरा प्रथम साक्षात्कार हुआ था। तभीसे मेरा और महाराजजीका सम्बन्ध चला आ रहा है। महाराजजीका मेरे प्रति अगाध प्रेम व स्नेह था। वे अनेक कार्योंमें मुझसे परामर्श लेते थे। वे मुझे अपना पारिवारिक

पूज्य श्रीनारायण महाराजजी–

श्रीभगवत् चरणारविन्दकी प्राप्तिका मार्ग दिखलानेवाले

पूज्य श्रीनारायण महाराजजी व्रजमण्डलके अद्भुत सन्त थे। वे एक ऐसे माध्यम थे जिनके आलोकमें यह वैष्णव–धर्म दिग्–दिगान्तरमें बहुत फला–फूला और देश–विदेशके अनेकानेक मानवसमूहोंको श्रीभगवत् चरणारविन्दकी प्राप्ति हुई या उन्हें ऐसा मार्ग दिखलाया जिससे वे मानव–जीवनके वास्तविक लक्ष्यको प्राप्त कर सकें। युगों–युगोंतक महाराजश्रीके आशीर्वचनोंसे लोग अपने जीवनका उद्धार करते रहेंगे।

अत्यन्त आत्मीय व्यवहारसे युक्त

सन् १९८५ में श्रीराम जन्मभूमि मुक्ति आन्दोलन प्रारम्भ हो चुका था। मुझपर मथुरा जनपदमें विश्व हिन्दू परिषद् और बजरंग दलके माध्यमसे इस अभियानको गति देनेका दायित्व था। अतः मेरा हिन्दु अस्मिता (मान–सम्मान) से जुड़े विभिन्न कार्यक्रमोंमें सहयोग करना स्वाभाविक ही था। इस कारण विभिन्न स्थानोंपर हिन्दु सम्मेलन और सन्त सम्मेलन भी आयोजित होते थे और यथासम्भव उनकी समस्याओंके समाधानमें सहयोग देनेका भी प्रयास होता था।

एक दिन बजरंग दलके नगर संयोजक श्रीसतीश डाबर मुझसे बोले कि आपको गौड़ीय मठके महाराजजीने स्मरण किया है, जबकि पूर्वमें मैंने कभी भी महाराजजीके दर्शन नहीं किये थे। मैं डाबरजीके साथ महाराजश्रीकी सेवामें उपस्थित हुआ। प्रथम भेंटमें ही महाराजश्रीके

—व्रजकी अद्भुत विभूति

—श्रीगोपेश्वरनाथ चतुर्वेदी

अत्यन्त आत्मीय व्यवहारको अनुभव किया एवं हिन्दु स्वाभिमानसे जुड़े प्रत्येक अभियानमें उनकी सहभागिताका आशीर्वाद प्राप्त हुआ। मैं अभिभूत था कि सहज ही एक महापुरुषका सम्बल प्राप्त हो गया। जब मैं गौड़ीय मठसे चलने लगा तो महाराजजी बोले कि चतुर्वेदीजी मठके दरवाजेपर एक व्यक्ति अंडेकी ढकेल (रेड़ी) लगाता है और अंडोंकी दुर्गन्धसे मन्दिरमें भजन–कीर्तन करना कठिन हो जाता है। कई बार मना कर चुके हैं—किन्तु झगड़ालू आदमी है—अतः हटनेको तैयार नहीं होता। मैंने कहा महाराजजी आपने सेवा बताकर परम कृपा की है। मुझसे जो बनेगा वह करुँगा। अन्ततः उस अण्डेकी ढकेलको वहाँसे हटना पड़ा। साथ ही महाराजश्रीकी प्रेरणासे बजरंग दलने सम्पूर्ण जनपदमें अभियान चलाया कि किसी भी मन्दिर या आश्रमके पास अण्डेकी ढकेल नहीं लगने दी जायेगी और यह आन्दोलन मथुरामें शत–प्रतिशत सफल भी रहा। फिर तो महाराजश्रीका आशीर्वाद एवं सहयोग प्रत्येक कार्यक्रममें सहज ही उपलब्ध होने लगा। सम्मेलनोंमें आपके ओजस्वी आशीर्वचनके द्वारा हिन्दू समाजको प्रेरणा मिलती थी। चाहे श्रीराम–शिला–पूजनका कार्यक्रम हो या पादुका–पूजनका—गौड़ीय मठका इनमें अधिकतम सहयोग मिलता था।

महाराजश्रीके आशीर्वादका बल

एक समय महाराजजीने श्रीकृष्ण–जन्मभूमिपर श्रीमद्भागवतकथाका आयोजन रखा। उसके लिए शोभायात्रा श्रीकेशवजी गौड़ीय–मठसे जन्मभूमि तक जानी

थी, किन्तु प्रशासनने शोभायात्रा निकालनेके लिए मना कर दिया। बहुतसे प्रयास हुये—किन्तु सभी असफल। रात्रिको हमलोग महाराजश्रीकी सेवामें उपस्थित हुए और निश्चय हुआ कि प्रातःकाल भजन–कीर्तन करते हुए जन्मभूमिकी ओर चलेंगे, जो होगा देखा जायेगा। महाराजजीने इसपर अपनी सहज स्वीकृति दे दी। प्रातःकाल धूमधामसे संकीर्तन शोभायात्रा प्रारम्भ हुई। जब प्रशासनको इसकी सूचना मिली—तबतक हम लोग विश्रामघाट पहुँच चुके थे। विश्राम घाटके पास भारी पुलिसबलने आकर यात्राको रोकनेका प्रयास किया, किन्तु महाराजजीके आशीर्वादसे पुलिसका दृढ़तापूर्वक प्रतिरोध किया गया और यात्रा श्रीकृष्ण जन्मभूमि तक निर्विघ्न पहुँचकर सम्पूर्ण हुई और

वाणी-वैशिष्ट्य सम्पद्—२

(श्रील गुरुदेव और श्रील रूप गोस्वामी)

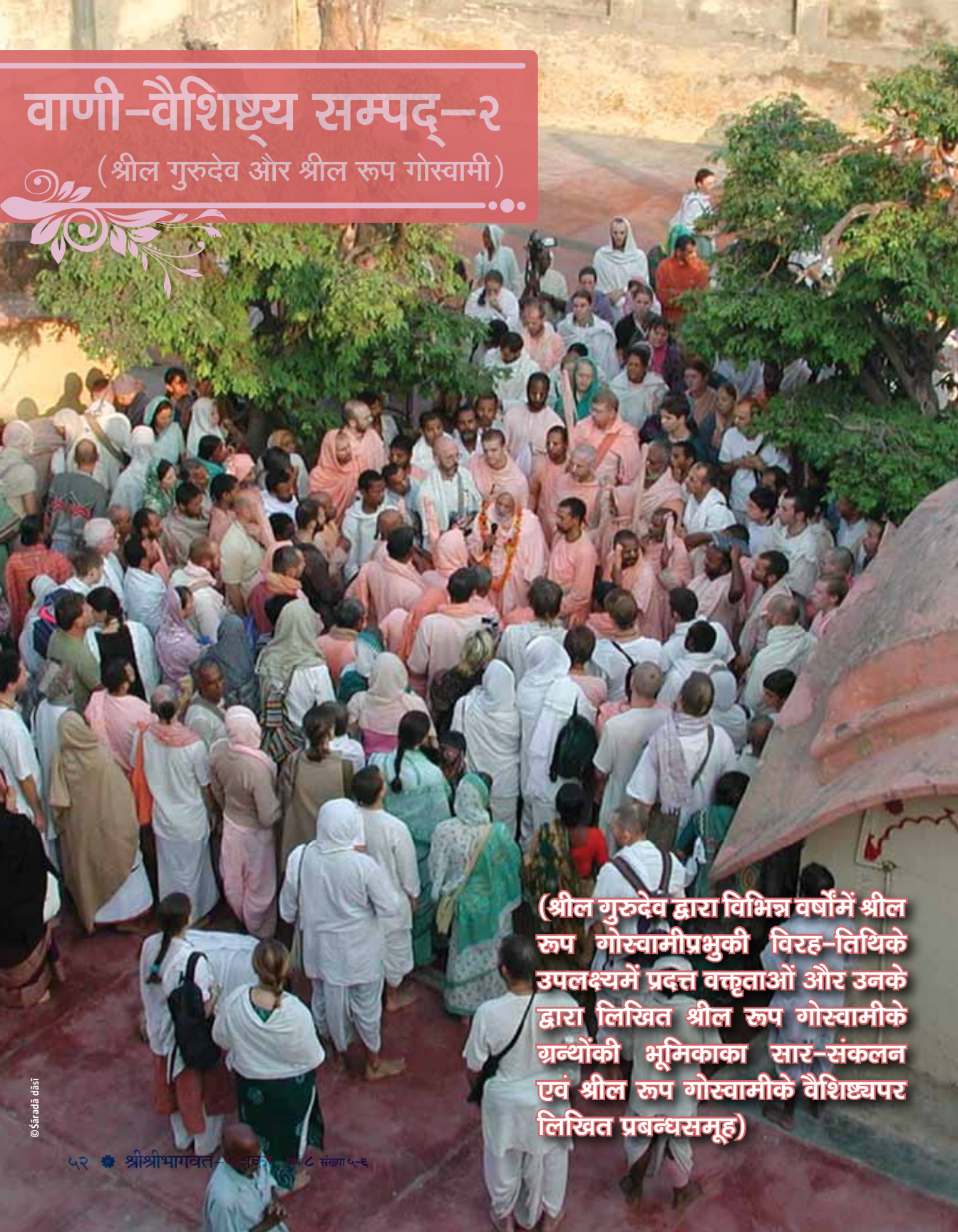

(श्रील गुरुदेव द्वारा विभिन्न वर्षोंमें श्रील रूप गोस्वामीप्रभुकी विरह-तिथिके उपलक्ष्यमें प्रदत्त वक्तृताओं और उनके द्वारा लिखित श्रील रूप गोस्वामीके ग्रन्थोंकी भूमिकाका सार-संकलन एवं श्रील रूप गोस्वामीके वैशिष्ट्यपर लिखित प्रबन्धसमूह)

©Śāradā dāsī

आविर्भाव

श्रील रूप गोस्वामी श्रीगौरलीलामें षड्गोस्वामियोंमेंसे अन्यतम तथा व्रजलीलामें श्रीरूप मञ्जरी हैं। इनका आविर्भाव भारद्वाज गोत्रीय यजुर्वेदीय ब्राह्मण कुलमें लगभग १४११ शकाब्द (अर्थात् १४८९ ईस्वी) में बङ्गालके मोरग्राम माधाईपुर नामक ग्राममें हुआ था। इनके पिताका नाम कुमारदेव था। इनके पूर्वज कर्णाटक देशमें वास करते थे। किसी कारणसे इनके पूर्वजोंमेंसे कोई एक अपने देशको छोड़कर बङ्गालमें आकर बस गए थे। श्रील रूप गोस्वामी इन्हींके वंशमें प्रादुर्भूत हुए। ये तीन भाई थे। बड़े भाई श्रील सनातन गोस्वामी थे और छोटे भाईका नाम अनुपम या वल्लभ था, जिनके पुत्र श्रीजीव गोस्वामी थे। बचपनसे ही इन तीनों भाइयोंकी भगवानके चरणकमलोंमें अत्यन्त अनुरक्ति थी।

उप-प्रधान मन्त्रीके पदपर नियुक्ति

विद्याध्ययन समाप्त करनेके उपरान्त युवावस्थामें ही श्रील सनातन गोस्वामी और श्रील रूप गोस्वामीकी तीक्ष्ण मेधा, उदारता और अन्यान्य समस्त गुणोंसे प्रभावित होकर बङ्गाल (गौड़देश) के तत्कालीन बादशाह हुसैन शाहने श्रील सनातन गोस्वामीको अपने प्रधानमन्त्री और श्रील रूप गोस्वामीको उप-प्रधानमन्त्रीके पदपर नियुक्त कर लिया।

श्रीचैतन्य महाप्रभुसे प्रथम भेंट

१५१४ ईस्वीमें जब श्रीचैतन्यमहाप्रभुने प्रथम बार व्रजयात्रा की थी, उसी समय मार्गमें रामकेलि ग्राममें श्रील रूप गोस्वामीकी उनसे प्रथम भेंट हुई थी। उस बार श्रीमन्महाप्रभु वहींसे ही लौटकर जगन्नाथपुरी चले गए, परन्तु उनके सत्सङ्गके प्रभावसे श्रील रूप गोस्वामीमें कृष्ण-प्राप्तिकी उत्कण्ठा इतनी अधिक प्रबल हो गयी कि अल्प समयमें ही उनका राजकार्य इत्यादि सभी कुछ छूट गया।

श्रीचैतन्य महाप्रभुसे द्वितीय बार भेंट एवं महाप्रभु द्वारा शक्ति-सञ्चार

जब श्रीचैतन्य महाप्रभुने द्वितीय बार श्रीवृन्दावनकी ओर यात्रा की, तब श्रीवृन्दावनका दर्शनकर लौटते समय प्रयागमें श्रीमन्महाप्रभुसे श्रील रूप गोस्वामीकी भेंट हुई। उस समय महाप्रभुने अपने प्रिय रूपको अत्यन्त योग्यपात्र जानकर उनके हृदयमें शक्ति-सञ्चारकर उनको भक्तिरसतत्त्वका अपूर्व विवेचन श्रवण कराया था। श्रीचैतन्य-चरितामृतमें इसका वर्णन किया गया है। यथा—

प्रभु कहे,—शुन, रूप, 'भक्तिरसेर लक्षण'।
सूत्ररूपे कहि विस्तार ना जाए वर्णन॥
पारावार-शून्य गभीर भक्तिरस-सिन्धु।
तोमाय चखाइते तार कहि एक 'बिन्दु'॥

(चै॰ च॰ म॰ १९/१३६-१३७)

अर्थात् श्रीमन्महाप्रभुने कहा—"हे प्रिय रूप! मैं तुम्हें भक्तिरसका लक्षण बतला रहा हूँ। किन्तु मैं सूत्र रूपमें ही कह रहा हूँ, क्योंकि विस्तार रूपसे इसका वर्णन करना असम्भव है। यह भक्तिरसामृतसिन्धु आर-पारशून्य और गभीर (अत्यन्त गहरा) है। मैं उसमेंसे तुम्हें एक बिन्दु ही चखा रहा हूँ।"

भक्तिरसामृत-सिन्धुकी एक बूँदकी महिमा

इस प्रकार दस दिनों तक प्रयागमें रहकर श्रीमन्महाप्रभुने श्रील रूप गोस्वामीके समक्ष भक्तिरसतत्त्वका अपूर्व वर्णन किया। श्रील रूप गोस्वामीने अपने भक्तिरसामृतसिन्धु, उज्ज्वलनीलमणि, ललितमाधव, विदग्धमाधव आदि ग्रन्थोंमें श्रीमन्महाप्रभुसे श्रवण किए गए भक्तिरसतत्त्वका ही विवेचन किया है। श्रीमन् महाप्रभु द्वारा प्रदत्त भक्तिरसामृत सिन्धुकी एक बूँदका पानकर श्रील रूप गोस्वामीने जिन

©Vasanti & Anita dasi

चाहिये। यदि हम श्रीगुरुके चरणकमलोंका आश्रय लेकर श्रील रूप गोस्वामीके निकट जाने की और यत्नपूर्वक इन विषयोंको समझनेकी चेष्टा नहीं करेंगे, तो कुछ समयके उपरान्त हम पुनः लौकिक क्रियाओंमें निमग्न हो जायेंगे।

श्रीमन्महाप्रभुके निकट वास, उनका कृपादेश प्राप्त तथा पुनः श्रीवृन्दावन आगमन

चातुर्मास्यके समाप्त होनेपर गौड़देशसे आये समस्त भक्त गौड़देशको लौट गये, किन्तु श्रील रूप गोस्वामी श्रीचैतन्य महाप्रभुके साथ नीलाचलमें ही रह गये तथा उन्होंने श्रीमन्महाप्रभुके साथ आनन्दपूर्वक दोलयात्रा (होली) इत्यादि उत्सव देखे। दोलयात्राके उपरान्त श्रीमन्महाप्रभुने श्रील रूप गोस्वामीके प्रति अत्यधिक कृपापूर्वञ्च उनमें शक्तिका सञ्चार किया तथा कहा कि "तुम वृन्दावन जाओ, वृन्दावनमें ही रहना तथा एक बार सनातनको भी यहाँ भेजना। व्रजमें जाकर रस–शास्त्रोंका निरूपण करना तथा वहाँके लुप्त–तीर्थोंको प्रकाशित करके उनकी महिमाका प्रचार करना। कृष्णसेवा अर्थात् श्रीविग्रह और मन्दिरमें सेवाकी स्थापना तथा अप्राकृत–भक्ति–रसका प्रचार करना। यह देखनेके लिये कि तुमने श्रीवृन्दावनमें क्या–क्या किया है, मैं वहाँ एकबार अवश्य आऊँगा।" इतना कहकर श्रीमन्महाप्रभुने श्रील रूप गोस्वामीको आलिङ्गन किया तथा उनके सिरपर अपने चरण रख दिये। श्रीमन्महाप्रभुके भक्तोंसे विदायी लेकर श्रील रूप गोस्वामी पुनः गौड़देश होते हुए श्रीधाम वृन्दावनमें आ पहुँचे।

श्रील रूप गोस्वामी द्वारा रचित ग्रन्थावली

श्रीमन्महाप्रभुकी कृपा एवं आदेशसे व्रजमें वास करते हुए श्रील रूप गोस्वामीने जिन ग्रन्थोंका प्रणयन किया, वे इस प्रकार हैं–श्रीभक्तिरसामृतसिन्धु, उज्ज्वलनीलमणि, लघुभागवतामृतम्, विदग्धमाधव, ललितमाधव, निकुञ्जरहस्यस्तव, स्तवमाला, श्रीराधाकृष्ण–गणोद्देशदीपिका, मथुरा–माहात्म्य, पद्यावली, उद्धवसन्देश, हंसदूत, दानकेलिकौमुदी, कृष्णजन्मतिथि विधि, प्रयुक्ताख्यात् मञ्जरी, नाटकचन्द्रिका इत्यादि।

उज्ज्वलनीलमणि तथा श्रीभक्तिरसामृतसिन्धु– गौड़ीय–वैष्णव रसशास्त्रके वेद

श्रील रूप गोस्वामी विरचित उज्ज्वलनीलमणि ग्रन्थ अखिल–रसामृतमूर्त्ति श्रीकृष्णके उन्नत–उज्ज्वल

आयी। फिर तो वे कृष्ण–विरहमें कातर होकर बहुत अधिक क्रन्दन करने लगे। कुछ समय उपरान्त आवेश शान्त होनेपर श्रीमन्महाप्रभुने उपस्थित भक्त–समुदायमें मन्द–मन्द मधुर–वाणीसे जो उपदेश दिये थे, श्रील रूप गोस्वामीने उन्हें उसी समय श्लोकाकारमें लिपिबद्ध कर लिया। उन एकादश श्लोकोंका एक मालाके रूपमें गुम्फन ही 'उपदेशामृत' है।

भक्तिराज्यमें प्रवेश करनेके इच्छुक साधकोंके लिये श्रील रूप गोस्वामीके उपदेश

भक्तिराज्यमें प्रवेश करनेके इच्छुक साधकोंको प्रारम्भमें भक्ति–प्रतिकूल क्रिया–कलापों अर्थात् वाणी, मन, क्रोध, जिह्वा, उदर और उपस्थ (जननेन्द्रिय)—इन छः वेगों; तथा अधिक आहार (संग्रह), वृथा प्रयास, वृथा ग्राम्य–आलाप, नियमाग्रह, कुसंग और लौल्य (असत् मतोंके ग्रहण करनेकी चंचलता) आदि दोषोंका परित्याग करना अति आवश्यक है। साथ ही भक्ति–पोषक विधियोंका पालन अर्थात् उत्साह, निश्चय, धैर्य, भक्ति सदाचार और भक्तोंकी वृत्तिको ग्रहण करना भी परमावश्यक है। इस प्रकार भक्तिमार्गमें कुछ दूर अग्रसर होनेपर छः प्रकारका सत्संग, त्रिविध भक्तोंका समादर और उनकी सेवाशुश्रूषा भी होनी चाहिए। अन्तमें कायिक और मानसिक रूपमें व्रजमण्डलमें निवास करते हुए व्रजरस–रसिक कृष्णानुरागीजनोंके आनुगत्यमें निरन्तर श्रीकृष्णनाम–रूप–गुण–लीलाकथाके कीर्तन और स्मरणमें क्रमशः अपनी जिह्वा और मनको नियुक्त करना चाहिए। श्रीमती राधिका श्रीकृष्णको सर्वाधिक प्रिय हैं, श्रीमती राधाजीका कुण्ड भी उसी प्रकार ही श्रीकृष्णको सर्वाधिक प्रिय है। इसलिए रागानुगा भक्ति–साधकोंको श्रीकृष्णकी सर्वाधिक प्रिय महाभाव–स्वरूपा श्रीमती राधिकाजी एवं श्रीराधाकुण्डका अवश्य ही आश्रय ग्रहण करना चाहिए। श्रीचैतन्य महाप्रभुके इन सर्वोत्तम उपदेशोंका सार उपदेशामृतके श्लोकोंमें पूर्णरूपसे संरक्षित है।

मञ्जरी–भावसे भक्ति ही उत्तमा–भक्ति है, क्योंकि उसके द्वारा ही यथार्थ 'आनुकूल्येन कृष्ण अनुशीलन' होता है। यहाँ केवल कृष्ण–अनुशीलन ही क्यों कहा गया है, राम या नारायण अनुशीलन क्यों नहीं कहा गया है? इसका कारण है कि राम, नृसिंह, नारायण आदि अवतार रास आदि लीलाएँ नहीं कर सकते हैं, यहाँ तक कि यशोदानन्दन कृष्ण भी रास–लीला नहीं कर सकते। अतः रासरसेश्वर श्रीराधाकान्तके प्रति अनुकूलमयी अर्थात् मञ्जरी–भाव युक्त प्रेमाभक्ति ही उत्तमा–भक्ति है।

साधनका वास्तविक तात्पर्य

साधन क्या है? मनमाने ढंगसे हरिनाम करना या ग्रन्थ पढ़ना या अर्चन करना साधन नहीं है। साधनका अर्थ है साध्यको लक्ष्य करके उसकी प्राप्तिके लिए चेष्टा करना, तथा साध्य है–प्रीति। भक्ति नित्य–सिद्ध भाव है। जब हम उस नित्य–सिद्ध भावको प्राप्त करनेके लिए अपनी इन्द्रियों द्वारा चेष्टा करते हैं और '**अन्याभिलाषिता शून्यं**' श्लोकके तात्पर्यको अपने जीवनमें अपनाते हैं, तब वह साधन–भक्ति है। हम कानसे श्रवण करते हैं, जिह्वासे हरिनाम लेते हैं और मनसे ध्यान करते हैं–ये सब चेष्टाएँ केवल भावको जागृत करनेके लिए ही हैं।

भावका वास्तविक तात्पर्य

साधनकी शिक्षा देनेके बाद श्रील रूप गोस्वामीने भावके सम्बन्धमें बतलाया। उन्होंने बतलाया कि हमें नित्य–सिद्ध परिकरोंके भावोंको प्राप्त करनेका प्रयास करना चाहिये।

जब साधकके जीवनमें ऐसी अवस्था आती है, तब वह महाजनों द्वारा दिखलाये गये मार्गका अनुसरण करते हुए साधक देहसे बाहरमें श्रीरूप–सनातन आदि व्रजवासियोंके आनुगत्यमें उनके जैसी श्रवण–कीर्त्तन–संख्यापूर्वक नाम–गान आदि कायिक–सेवा तथा सिद्धदेहसे श्रीललिता, श्रीविशाखा और श्रीरूप–मञ्जरी आदिके आनुगत्यमें मानसी–सेवा करता है।

उस अप्राकृत–चिन्मय–मानसी–सेवाका अनुशीलन करनेके लिए श्रीश्रीराधाकृष्णके जिन नित्य परिकरोंका परिचय तथा उनकी प्रेममयी सेवाकी प्रणालीको जाननेकी आवश्यकता होती है, उसीका ही 'श्रीश्रीराधाकृष्णगणोद्देश–दीपिका' ग्रन्थमें वर्णन किया गया है। प्रसङ्गवशतः यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि सिद्धदशामें उपासनाकी परिपूर्णताके लिए यही ग्रन्थ एकमात्र पथ–प्रदर्शक है।

टेर कदम्ब–श्रील रूप गोस्वामीकी भजन कुटी

नन्दग्राममें आशीषेश्वर महादेवके निकट स्थित टेरकदम्ब नामक लीला–स्थलीमें ही श्रील रूप गोस्वामीकी भजन कुटी स्थित है। श्रील रूप गोस्वामी श्रीकृष्णकी मधुर–लीलाओंकी स्मृतिके लिए प्रायः इस निर्जन स्थलीमें भजन करते थे। वे यहाँपर अपने प्रिय ग्रन्थोंकी रचना भी करते थे। उन्हें जब कभी महाभावमयी श्रीमती राधिकाके विप्रलम्भ–भावोंकी स्फूर्ति होती, तो हठात् उनके मुखसे विप्रलम्भ–भावमय श्लोक निकल आते थे। उस समय वहाँके कदम्ब वृक्षोंके समस्त पत्ते उस विरहाग्निमें सूखकर नीचे गिर जाते तथा पुनः जब उनके हृदयमें युगल मिलनकी स्फूर्ति होती, तब उनके मिलन विषयक पदोंको सुनकर कदम्ब वृक्षोंमें नई–नई कोपलें निकल आती थीं।

श्रीमती राधारानी द्वारा श्रील रूप गोस्वामीकी इच्छाकी पूर्त्ति

एक समय श्रील सनातन गोस्वामी श्रील रूप गोस्वामीसे मिलनेके लिए टेर कदम्ब आये। उन दोनोंमें परस्पर श्रीकृष्णकी रसमयी कथाएँ होने लगीं। दोनों कृष्णकथामें इतने आविष्ट हो गये कि उन्हें समयका ध्यान ही नहीं रहा। दोपहरके पश्चात् आवेश कुछ कम होनेपर श्रील रूप गोस्वामीने सोचा "प्रसाद ग्रहण करनेका समय हो गया है, किन्तु मेरे पास कुछ भी नहीं है जिससे श्रीसनातन गोस्वामीकी सेवा कर सकूँ।" इसलिए वे कुछ चिन्तित हो गये। इतनेमें ही साधारण वेशमें एक सुन्दरी बालिका वहाँ उपस्थित हुई और श्रील रूप गोस्वामीको कहने लगी—"बाबा! मेरी मैयाने यह चावल, दूध और चीनी भेजी है, तुम शीघ्र खीर बनाकर पा लेना।" यह कहकर वह चली गई। किन्तु थोड़ी देरमें वह बालिका पुनः लौट आई और सामग्रीको उसी अवस्थामें देखकर बोली—"बाबा! तुम्हें बातचीत करनेसे ही अवसर नहीं, अतः मैं स्वयं ही पाक कर देती हूँ।" ऐसा कहकर उसने झट आसपाससे सूखे कण्डे (उपले) लाकर अपनी फूँकसे ही आग उत्पन्नकर थोड़ी ही देरमें अत्यन्त मधुर एवं सुगन्धित खीर प्रस्तुत कर दी और बोली—"बाबा! ठाकुरजीको भोग लगाकर जल्दीसे पा लो। मुझे बहुत विलम्ब हो गया है। मेरी मैया डाँटेगी, मैं जा रही हूँ।" ऐसा कहकर वह चली गई। श्रील रूप गोस्वामीने श्रीकृष्णको समर्पितकर वह खीर श्रील सनातन गोस्वामीके आगे प्रस्तुत की। जब दोनों भाइयोंने खीर खाई, तो उन्हें श्रीराधाकृष्णकी स्फूर्ति हो आई। वे हा राधे! हा राधे! कहकर विलाप करने लगे। श्रील सनातन गोस्वामीने कहा "मैंने ऐसी मधुर खीर जीवनमें कभी नहीं पायी। रूप, क्या भोजनके लिए तुमने मन–ही–मन कोई

श्रील रूप

(ॐ विष्णुपाद

श्रीचैतन्यमनोऽभीष्टं स्थापितं येन भूतले।
स्वयं रूपः कदा मह्यं ददाति स्वपदान्तिकम्॥

(प्रेमभक्तिचन्द्रिका मङ्गलाचरण २)

अर्थात् जिन्होंने धरातलपर श्रीकृष्णचैतन्य महाप्रभुके मनोऽभीष्टकी स्थापना की है, वे श्रील रूप गोस्वामी कब मुझे अपने चरणकमलोंमें स्थान प्रदान करेंगे?

श्रीचैतन्य महाप्रभुका मनोऽभीष्ट क्या है?

अनर्पितचरीं चिरात् करुणयावतीर्णः कलौ।
समर्पयितुमुन्नतोज्ज्वल रसां स्वभक्तिश्रियम्॥

(श्रीविदग्धमाधव १/२)

अर्थात् जिस सर्वोत्कृष्ट उज्ज्वल–रसका दान उन्होंने जगतको चिरकाल तक नहीं दिया, उसी स्वभक्तिरूपी सम्पत्तिकी 'श्री' का दान करनेके लिए वे करुणापूर्वक कलिकालमें अवतीर्ण हुए हैं।

स्वयं–अवतारी श्रीकृष्ण षडैश्वर्यशाली होनेके साथ–साथ रसिकशेखर भी हैं। उन्होंने स्वयं मधुर आदि बारह रसोंका आस्वादन तो किया, परन्तु जगज्जीवोंको उस मधुर प्रेमका दान नहीं किया। इसलिए श्रीराधाभाव और कान्तिसे सुवलित श्रीकृष्णस्वरूप अर्थात् श्रीशचीनन्दन गौरहरि उस उन्नतोज्ज्वल–रसकी 'श्री' अर्थात् शोभाको जगज्जीवोंको प्रदान करनेके लिए कृपापूर्वक कलियुगकी प्रथम सन्ध्यामें अवतीर्ण हुए। उन्नतोज्ज्वल–रस **'परकीया भाव'** है। यह परकीया भाव श्रीराधिकाजी और उनकी कायव्यूहस्वरूपा गोपियोंमें ही है। श्रीराधाजीका वह मादनाख्य भाव या उनकी कायव्यूह गोपियोंका रूढ़ आदि भाव किसी भी जीवको नहीं दिया जा सकता; किन्तु हाँ, उनके उस भावकी 'श्री'–अर्थात् शोभा जीवोंको दी जा सकती है।

ह्लादिनीशक्ति स्वरूपा श्रीराधिका प्रेमकल्पलता हैं–गोपियाँ उस प्रेमरूपी कल्पलताके पत्ते और पुष्प आदि हैं तथा उन सबकी शोभा उनकी मञ्जरियाँ हैं। जिस प्रकार पवनके झोंकोंके द्वारा हिलनेपर ये मञ्जरियाँ लताकी शोभाको और भी अधिक वर्द्धित कर देती हैं, उसी प्रकार श्रीराधिकाजीकी अन्तरङ्ग सेविकाएँ–श्रीरूपमञ्जरी आदि श्रीराधिकाजीकी शोभा हैं। उन्हीं मञ्जरियोंके भावको श्रीनाम–संकीर्तनके माध्यमसे जगज्जीवोंको प्रदान करनेके लिए ही श्रीकृष्णने श्रीचैतन्य रूपमें अवतार ग्रहण किया।

गोस्वामीका वैशिष्ट्य

श्रीश्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराजजी द्वारा लिखित प्रबन्ध)

श्रीचैतन्य महाप्रभुका मनोऽभीष्ट परकीया–भावका प्रचार करना था। श्रीरूप गोस्वामीने उनके उस मनोऽभीष्टको उन्हींकी प्रेरणा और कृपासे इस जगतमें स्थापित किया है। श्रीचैतन्य महाप्रभुसे पूर्व श्रीकृष्ण और गोपियोंके इस उन्नतोज्ज्वल–परकीया–भावको लोग घृणाकी दृष्टिसे देखते थे। परन्तु श्रील रूपगोस्वामीने प्रबल शास्त्रीय युक्तियोंसे श्रीकृष्णरूप नायक और गोपीरूप नायिकाओंके बीच परकीया–भावको परम–पवित्र, शुद्ध और सर्वोन्नत–रसके रूपमें स्थापित किया है।

परकीया–भाव स्थापनाकी युक्ति

श्रील रूप गोस्वामीने उज्ज्वलनीलमणि–ग्रन्थमें कहा है—

लघुत्वमत्र यत्प्रोक्तं तत्तु प्राकृतनायके।
न कृष्णे रसनिर्यासस्वादार्थमवतारिणि॥

(नायकभेद प्रकरणम् २१)

उपपति भावकी जो लघुता बतलायी गयी है, वह केवल प्राकृत नायकके सम्बन्धमें ही प्रयोज्य है—स्वयं श्रीकृष्णके सम्बन्धमें नहीं। श्रीकृष्ण धर्म–अधर्मके नियन्ता एवं अवतारोंके भी चूड़ामणि सर्व–अवतारी हैं। जब अवतारोंके ऊपर ही धर्म–अधर्मका नियामकत्व नहीं रहता, तब अवतारी श्रीकृष्णके प्रति उसकी सम्भावना कैसे हो सकती है? श्रीकृष्ण द्वारा उपपति भाव ग्रहण करनेका कारण है—रसनिर्यास (रसके सारको) आस्वादन करनेकी अभिलाषा। श्रीकृष्ण सर्वकारणकारण, सबके आदि, स्वयं अनादि, सर्वशक्तिमान् और अखिलरसामृत–सिन्धु हैं; तथा गोपियाँ (श्रीब्रह्मसंहिता ५/३७)—**'आनन्दचिन्मयरसप्रतिभाविताभिः ताभिर्य एव निजरूपतया कलाभिः'** हैं। आनन्दचिन्मयरस अर्थात् परमप्रेममय उन्नतोज्ज्वल नामक रसमें निमग्न स्वरूपवाली एवं निज–स्वरूप अर्थात् श्रीकृष्ण–स्वरूप होनेके कारण ह्लादिनी–शक्तिकी वृत्तिरूपा हैं। फिर ऐसे श्रीकृष्ण जहाँ नायक हैं और ऐसी गोपियाँ जहाँ नायिकाएँ हैं, तब उस परकीया–भावमें दोष कैसे हो सकता है?

श्रील रूप गोस्वामीका

(ॐ विष्णुपाद श्रीश्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराजजी द्वारा

मङ्गलाचरण

श्रीचैतन्य मनोऽभीष्टं स्थापितं येन भूतले।
स्वयं रूपः कदा मह्यं ददाति स्वपदान्तिकम्॥

(प्रेमभक्तिचन्द्रिका मङ्गलाचरण २)

अर्थात् श्रीचैतन्य महाप्रभुके मनोऽभीष्टको जिन्होंने भूतलपर (इस जगत्में) स्थापित किया था, वे श्रीरूप गोस्वामी कब मुझे अपने चरणोंमें स्थान प्रदान करेंगे।

(मुक्ताचरित उपसंहार १)

अर्थात् दाँतोंमें तृण धारण करते हुए अर्थात् अत्यन्त दीनतापूर्वक मैं जन्म–जन्मान्तरों तक श्रीरूप गोस्वामीके चरणोंकी धूल बननेकी पुनः पुनः प्रार्थना करता हूँ।

श्रीरूप मञ्जरीसे श्रील रूप गोस्वामीकी दयाका वैशिष्ट्य

श्रीकृष्णलीलाकी श्रीरूप मञ्जरी ही श्रीगौरलीलामें श्रीचैतन्य महाप्रभुके मनोऽभीष्टको पूर्ण करनेवाले श्रीरूप गोस्वामी हैं। श्रीरूप मञ्जरी राधिकाजीकी सर्वश्रेष्ठ सेविका हैं और राधापक्षीय हैं। उनका स्थायी भाव, रसोल्लास रति है और उनके लिए कहा गया है–

श्रीरूपमञ्जरिकरार्चितपादपद्म–
गोष्ठेन्द्रनन्दनभुजार्पितमस्तकायाः।

कुछ वैशिष्ट्य

लिखित प्रबन्ध)

हा मोदतः कनकगौरि पदारविन्द–
सम्वाहनानि शनकैस्तव किं करिष्ये॥

(विलापकुसुमाञ्जलि ७५)

अर्थात् विहारके पश्चात् क्लान्त श्रीमती राधिका श्रीकृष्णकी गोदमें सिर रखकर लेटी हुई हैं। श्रीकृष्ण अपने सुकोमल, सुगन्धित हस्तकमलोंसे उनके केशोंको धीरे–धीरे सहला रहे हैं तथा अपनी सुकोमल अंगुलियोंसे उनके उलझे हुए केशोंको सुलझा रहे हैं। उस समय श्रीरूप मञ्जरी अपनी ईश्वरीके जिन

सुकोमल श्रीचरणोंको अपनी गोदमें रखकर प्रेमसे सेवा करती हैं, क्या वे श्रीरूपमञ्जरी इङ्गितसे मुझे बुलाकर उन्हीं श्रीचरणोंकी सेवामें नियुक्त करेंगी? अहा! उन श्रीचरणोंको धीरे–धीरे सम्वाहन करनेका परम दुर्लभ सुअवसर मुझे कब प्राप्त होगा?

ताम्बूलार्पणपादमर्दनपयोदानाभिसारादिभि–
र्वृन्दारण्यमहेश्वरी प्रियतया यास्तोषयन्ति प्रियाः।
प्राणप्रेष्ठसखीकुलादपिकिलासङ्कोचिता भूमिकाः
केलीभूमिषु रूपमञ्जरिमुखास्तादासिकाः संश्रये॥

(व्रजविलासस्तव ३८)

अर्थात् जो ताम्बूल प्रदान करने, चरण दबाने, जल देने और अभिसार कराने आदि कार्योंके द्वारा प्रेमपूर्वक श्रीवृन्दावनकी ईश्वरी श्रीमती राधिकाको नित्य सन्तुष्ट रखती हैं, उन प्राणप्रेष्ठ सखियोंकी अपेक्षा भी सेवाकार्यमें निसंकोच भावको प्राप्त हुई श्रीमती राधिकाजीकी श्रीरूपमञ्जरी आदि प्रमुख दासियोंका मैं आश्रय ग्रहण करती हूँ।

श्रीरूपमञ्जरी एवं उनकी अनुगत मञ्जरियोंमें एक विशेषता है कि श्रीश्रीराधाकृष्णकी निभृत–निकुञ्ज सेवामें भी ये निसंकोच आ–जा सकती हैं और युगलकी सेवा कर सकती हैं। यहाँ तक कि जब श्रीकृष्ण और श्रीराधाजीके वस्त्र अस्त–व्यस्त रहते हैं, उस अवस्थामें भी मञ्जरियोंको वहाँपर प्रवेश करनेका और उनकी सेवा करनेका अधिकार है। किन्तु यह सौभाग्य उनसे श्रेष्ठ ललिता, विशाखा आदि प्रियनर्म सखियोंको भी प्राप्त नहीं है, जो श्रीरूप मञ्जरी आदिकी अनुमतिके बिना उस निभृत–निकुञ्जमें नहीं पहुँच सकतीं। श्रीरूपमञ्जरीका इतना अधिक वैशिष्ट्य है, फिर भी उन्होंने (श्रीरूपमञ्जरीने) ऐसी सेवाको प्राप्त करनेका साधन जीवोंके लिए उपदेश नहीं किया। किन्तु श्रीरूप गोस्वामीके रूपमें उन्होंने श्रीचैतन्य महाप्रभुके मनोऽभीष्टको पूर्णकर

लेकर, साधुसङ्ग, भजनक्रिया, अनर्थ निवृत्ति, निष्ठा, रुचि, आसक्ति, भाव, प्रेम, स्नेह, मान, प्रणय, राग, अनुराग, भाव, महाभाव, रूढ़, अधिरूढ़ महाभाव, मोहन महाभाव, मादन महाभाव आदिका अपूर्व विश्लेषण किया है और इन एक–एक स्तरकी एक–एक परिभाषा दी है, जो अन्यत्र कहीं भी किसी भी ग्रन्थमें उपलब्ध नहीं है। यहाँ तक कि उन्होंने हाव, भाव, हेला, किलकिञ्चित्, दिव्योन्माद, चित्रजल्प आदि भावोंकी भी परिभाषा दी है। श्रील रूप गोस्वामीसे पूर्व भक्तिरसकी इतनी सुन्दर और प्रामाणिक विवेचना और कहीं भी उपलब्ध या दृष्टिगोचर नहीं होती।

जैसे–श्रद्धा किसे कहते हैं? **श्रद्धा तु अन्योपायवर्जं भक्ति–उन्मुखी चित्तवृत्ति–विशेषः।** अर्थात् कर्म, ज्ञान, योग, तपस्या आदि अन्यान्य उपायों या मार्गोंको छोड़कर भक्ति–उन्मुखी चित्तवृत्ति ही श्रद्धा है। इसका स्वरूप–लक्षण श्रीकृष्णकी सेवावृत्ति है। श्रीकृष्णकी सेवा–वासनाको ही सेवा–वृत्ति कहते हैं। शरणागति ही उसका बाह्य–लक्षण है।

साधन–भक्ति किसे कहते हैं?

श्रील रूप गोस्वामिपादकी तिरोभाव–तिथिके उपलक्ष्यमें महा–महोत्सवका आयोजन करनेके कुछेक मुख्य उद्देश्य

नित्यलीलाप्रविष्ट श्रीश्रील प्रभुपाद भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुरके अन्तिम, मुख्य, सर्वोत्तम तथा सार्वकालिक उपदेश 'श्रीचैतन्यदेवके मनोऽभीष्ट संस्थापक श्रील रूप गोस्वामीके चरणकमलोंकी धूल होना ही हमारे जीवनकी एकमात्र आकांक्षाकी वस्तु है' तथा 'सभी मिल–जुलकर परम उत्साहपूर्वक श्रीरूप–रघुनाथकी वाणीका जगतमें प्रचार करें' आदिको ही शिरोधार्य करके अपने जीवनका सर्वस्व माननेवाले नित्यलीला प्रविष्ट श्रीश्रीलभक्तिप्रज्ञान केशव गोस्वामी महाराजके अन्तरङ्ग परिकर ॐ विष्णुपाद श्रीश्रील भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराज द्वारा लगभग पिछले बीस वर्षोंसे श्रील रूप गोस्वामिपादकी तिरोभाव–तिथिके उपलक्ष्यमें श्रीधाम वृन्दावन स्थित श्रीरूप–सनातन गौड़ीय मठमें पाँच दिवस व्यापी महा–महोत्सवका आयोजन किया जाता है। इस महोत्सवके कुछेक मुख्य उद्देश्य इस प्रकार हैं–

(१) जगतके लोगोंको श्रील रूप गोस्वामीके वैशिष्ट्योंसे अवगत कराना।

(२) श्रीचैतन्य मनोऽभीष्ट क्या है? इसे निर्धारित करना।

(३) उन्नत–उज्ज्वल–रस अर्थात् पारकीय–रसकी श्रेष्ठताको श्रील रूप गोस्वामी द्वारा प्रस्तुत की गई सुदृढ़ शास्त्रीय युक्तियों द्वारा स्थापन करना।

(४) गौड़ीय–वैष्णव–सम्प्रदायके महानिधि स्वरूप अप्राकृत–रसका विभिन्न दृष्टिकोणोंसे आस्वादन कराना।

(५) श्रीब्रह्म–माध्व–गौड़ीय–वैष्णव–सम्प्रदायमें श्रील रूप गोस्वामीका अवदान।

(६) गौड़ीय भक्तोंके प्रति श्रील रूप गोस्वामीकी कृपा।

(७) श्रील रूप गोस्वामी द्वारा रचित ग्रन्थोंका दिग्दर्शन प्रस्तुत करना।

(श्रीश्रीभागवत–पत्रिका वर्ष–४ संख्या–७)

श्रीश्रीभागवत–पत्रिकाके ग्राहकोंसे वार्षिक सदस्यता–शुल्क भुगतानके लिए निवेदन

आदरणीय श्रीश्रीभागवत–पत्रिकाके ग्राहको!

आपसे पुनः यह निवेदन किया जा रहा है कि आपमेंसे जिन्होंने अभी तक इस वर्षका देय वार्षिक शुल्क भुगतान नहीं किया है, वह शीघ्र–अतिशीघ्र इस वार्षिक शुल्कका भुगतानकर पत्रिकाके माध्यमसे श्रीवैकुण्ठ–वार्त्तावहको नियमित रूपसे प्राप्त करनेके सौभाग्यका वरण करें।

श्रीश्रीभागवत–पत्रिकाके इस अष्टम वर्षमें समस्त अंक विरह–विशेषांक हेतु रंगीन और सचित्र प्रकाशित होंगे, अतः केवल इस अष्टम वर्षके लिए ही वार्षिक शुल्क भारतीय सदस्योंके लिए ३०० रुपये तथा विदेशी सदस्योंके लिए ३० अमेरिकन डालर किया गया है। हम अपने सभी सहृदय पाठक–भक्तोंसे इस विषयमें सहयोगकी आशा करते हैं।

इस वर्षसे सदस्यवृन्द निम्न प्रकारसे सहजरूपमें शुल्क भुगतान कर सकते हैं:

भारतीय सदस्योंके लिए

नये सदस्योंके लिए

कृपया www.bhagavatpatrika.com वैबसाइटपर जायें और वहाँ दिये गये Instructions के अनुसार सदस्य बनें।

सदस्यता नवीकरणके लिए

(१) Bank to bank NEFT transfer

Account name: SRI BHAGVAT PATRIKA SRI GOUDIYA
Account no. : 037201000010611
IFSC code: IOBA0000372
Bank: Indian Overseas bank

८७९१२७३३०६ phone number पर अपनी ग्राहक संख्या या अपना नाम और सदस्य शुल्कके साथ एक SMS भेजें।

अथवा

mathuramath@gmail.com में अपनी ग्राहक संख्या या अपना नाम और सदस्य शुल्कके साथ एक email भेजें।

(२) Demand draft or Cheque (account payee) payable to:
"SRI BHAGVAT PATRIKA SRI GOUDIYA"
श्रीश्रीभागवत–पत्रिका कार्यालय,
श्रीकेशवजी गौड़ीय मठ, जवाहर हाट, मथुरा, उ.प्र.
२८१००१ के पतापर
Demand draft or Cheque भेजें।

(३) Money order
श्रीश्रीभागवत–पत्रिका कार्यालय,
श्रीकेशवजी गौड़ीय मठ, जवाहर हाट, मथुरा, उ.प्र.
२८१००१ के नामपर भेजें।

विदेशी सदस्योंके लिए

नये सदस्य तथा सदस्यता नवीकरणके लिए

कृपया www.bhagavatpatrika.com वैबसाइटपर जायें और वहाँ दिये गये instructions के अनुसार नये सदस्य बनें या अपनी सदस्यताका नवीकरण करें।

विदेशी सदस्योंके लिए इस वर्षसे "Paypal" द्वारा भुगतान करनेकी सुविधा उपलब्ध करायी गयी है। अधिक जानकारीके लिए www.bhagavatpatrika.com वैबसाइट देखें।

श्रीश्रीभागवत पत्रिकाकी नयी Website:
www.bhagavatpatrika.com

श्रीश्रीगुरु–गौराङ्गकी कृपासे अब श्रीश्रीभागवत पत्रिका online पर भी www.bhagavatpatrika.com नामक website पर उपलब्ध है। इस नयी website द्वारा श्रीश्रीभागवत पत्रिकाके कुछेक पुराने अंक एवं नयी संख्याओंके अंश download किये जा सकते हैं। साथ ही इस वर्षकी व्रत–तालिका भी download की जा सकती है। मुख्यत: अब इस website द्वारा श्रीश्रीभागवत पत्रिकाके नये सदस्य बनने या सदस्यता नवीकरण करानेके लिए सुविधा भारतीय तथा अन्तराष्ट्रीय भक्तोंके लिए उपलब्ध करायी गयी है।

विशेष ज्ञातव्य

श्रीश्रीभागवत–पत्रिकाके पाठकों और सदस्योंको सूचित किया जाता है कि श्रीपत्रिका इस सम्पूर्ण आठवें वर्ष श्रील गुरुदेव नित्यलीलाप्रविष्ट ॐ विष्णुपाद श्रीश्रीभक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराजजीके विरह–विशेषांकके रूपमें प्रकाशित होगी। अत: इस वर्ष पत्रिकाकी दो–दो संख्याएँ एक साथ दो–दो महीनोंमें एक बार प्रकाशित होंगी।

श्रील गुरुदेवके प्रति अपनी कृतज्ञताका स्मरण करते हुए श्रील गुरुदेवके चरणाश्रित (१) श्रीमान् मधुमङ्गल दास ब्रह्मचारी (पुरी), (२) श्रीमान् वंशीवदन दास ब्रह्मचारी (पुरी), (३) श्रीमान् बलराम दास ब्रह्मचारी (दिल्ली), (४) श्रीमान् कुलदीप भौमिक (कोलकत्ता), (५) श्रीमान् दुलाल साहा गोपाल साहा (कोलकत्ता), (६) श्रीमान् प्रियकृष्ण दास (फरीदाबाद) ने इस विरह–विशेषाङ्कके प्रकाशन हेतु आंशिक आर्थिक योगदानके द्वारा विशेष सेवा–सौभाग्यको वरण किया है। इन सबकी विशेष सेवाके लिये श्रील गुरुदेव अपने नित्यधामसे इन पर विशेष कृपा वर्षित करें–यही श्रील गुरुदेवके अभय चरणकमलोंमें विनम्र प्रार्थना है।

'श्रीश्रीभागवत पत्रिका' का सम्पादक एवं कार्यकारी मण्डल

श्रीब्रजमण्डल परिक्रमा–२०११

श्रीकेशवजी गौड़ीय मठ, मथुरा

०९ अक्टूबर रविवार
(त्रयोदशी) श्रीदुर्वासा ऋषि गौड़ीय आश्रमका दर्शन। सायंकाल वृन्दावन प्रस्थान। ०९ अक्टूबर सायं से २४ अक्टूबर प्रातः तक गोपीनाथ भवनमें प्रसाद सेवा।

१० अक्टूबर सोमवार
(चतुर्दशी) हरिकथा एवं विश्राम।

११ अक्टूबर मंगलवार
श्रीशरद पूर्णिमा, कार्तिक व्रत आरम्भ, केशीघाटमें परिक्रमाका संकल्प, श्रीश्रीमद्भक्तिप्रज्ञान केशव गोस्वामी महाराजजीका विरह–महोत्सव।

१२ अक्टूबर बुधवार
(पूर्णिमा) कालीय दह, श्रीप्रबोधानन्द सरस्वतीका भजन कुटीर और समाधि, श्रीसनातन गोस्वामीका भजन कुटीर, श्रीमदनमोहन, दानगली।

१३ अक्टूबर गुरुवार
(प्रतिपदा) सेवाकुञ्ज, श्रीराधादामोदर, इमलीतला, शृंगार वट आदि।

१४ अक्टूबर शुक्रवार
(द्वितीया) बेलवनका दर्शन।

१५ अक्टूबर शनिवार
(तृतीया) निधुवन, श्रीराधारमण, श्रीगोकुलानन्द, श्रीगोपीनाथ, श्रीश्यामसुन्दर।

१६ अक्टूबर रविवार
(चतुर्थी) हरिकथा एवं विश्राम।

१७ अक्टूबर सोमवार बस द्वारा
(पञ्चमी) (वृन्दावनसे) मधुवन, तालवन, कुमुदवन, मानसरोवर, माँटवन, भद्रवन, भाण्डीर वनमें प्रसाद–सेवा।

१८ अक्टूबर मंगलवार
(षष्ठी) धीर समीर, वंशीवट, गोपेश्वर, गोविन्ददेव।

१९ अक्टूबर बुधवार बस द्वारा
(सप्तमी) दाऊजी, श्रीदाऊजी गौड़ीय मठमें प्रसाद–सेवा, ब्रह्माण्ड घाट, महावन–गोकुल, रावल, लौहवन।

२० अक्टूबर गुरुवार
(अष्टमी) भातरौल, अक्रूर घाट, यज्ञपत्नी स्थानमें प्रसाद–सेवा।

२१ अक्टूबर शुक्रवार
(नवमी) श्रील भक्तिरक्षक श्रीधर गोस्वामी महाराजजीका आविर्भाव महोत्सव।

२२ अक्टूबर शनिवार बस द्वारा
(दशमी) खेलनवन, रामघाट, विहारवन, चीरघाटमें प्रसाद–सेवा, वत्सवन, गरुड़गोविन्द।

२३ अक्टूबर रविवार
(एकादशी) वृन्दावन परिक्रमा।

२४ अक्टूबर सोमवार बस द्वारा
(द्वादशी) बहुलावन, पैठा, चन्द्रसरोवर होकर श्रीगिरिधारी गौड़ीय मठ, गोवर्धनमें वास।

२५ अक्टूबर मंगलवार
(त्रयोदशी) गोवर्धन बड़ी परिक्रमा–दानघाटी, आन्यौर, गोविन्दकुण्ड, पूछरी, सुरभिकुण्डमें प्रसादसेवा, जतीपुरा। सायंकाल दीपावली।

२६ अक्टूबर बुधवार
(अमावस्या) राधाकुण्ड परिक्रमा, कुसुम सरोवर आदि होकर गिरिधारी गौड़ीय मठमें प्रसाद–सेवा। अन्नकूट महोत्सव।

२७ अक्टूबर गुरुवार
(प्रतिपदा) अन्नकूट महोत्सव। सायंकाल बड़ी दीपावली।

२८ अक्टूबर शुक्रवार
(द्वितीया) यम द्वितीया, भैयादूज। श्रीहरिदेव, ब्रह्मकुण्ड, चकलेश्वर महादेव, श्रीसनातन गोस्वामीकी भजन कुटीर, मुखारविन्द आदि।

२९ अक्टूबर शनिवार
(तृतीया) श्रील भक्तिवेदान्त वामन गोस्वामी महाराज एवं श्रील भक्तिवेदान्त त्रिविक्रम गोस्वामी महाराजका तिरोभाव महोत्सव।

३० अक्टूबर रविवार
(चतुर्थी) श्रील भक्तिवेदान्त स्वामी महाराजका तिरोभाव महोत्सव।

३१ अक्टूबर सोमवार
(पञ्चमी) किल्लोल कुण्ड, ग्वाल पोखरा, श्याम तलैया, रत्नवेदी, चरणचिह्न, नारदकुण्ड। श्रीलभक्तिश्रीरूप सिद्धान्ती गोस्वामी महाराजका आविर्भाव महोत्सव।

१ नवम्बर मंगलवार बस द्वारा
(षष्ठी) गांठौली, गुलालकुण्ड, डीग, भोजनथाली, पिछल पहाड़ी, व्योमासुरकी गुफा, गोविन्दजी, वृन्दादेवी, कामेश्वर महादेव, विमलकुण्डमें प्रसाद–सेवा, चरण पहाड़ी।

२ नवम्बर बुधवार
(सप्तमी) श्याम ढाक, दोहनी कुण्ड।

३ नवम्बर गुरुवार बस द्वारा
(अष्टमी) नन्दगाँव, मार्गमें प्रेमसरोवर, संकेत, नन्दखिड़क, उद्धवक्यारी, ललिताकुण्ड, नन्दभवन, टेर–कदम्ब, आशीषेश्वर महादेवमें प्रसाद–सेवा, पावन सरोवर, छोटी चरण पहाड़ी।

४ नवम्बर शुक्रवार
(नवमी) हरिकथा एवं विश्राम।

५ नवम्बर शनिवार बस द्वारा
(दशमी) सांकरी खोर, चिकसौली, गह्वरवन परिक्रमा, विलासगढ़, मानगढ़, दानगढ़, मोरकुटी, श्रीजी मन्दिर, बरसाना, पीलीपोखर, ऊँचागाँवमें प्रसाद–सेवा, सखीगिरि पर्वत, सूर्यकुण्ड।

६ नवम्बर रविवार
(एकादशी) श्रील गौरकिशोर दास बाबाजी महाराजका तिरोभाव महोत्सव। भीष्मपंचक। दीक्षा समारोह।

७ नवम्बर सोमवार
(द्वादशी) आनन्द धाम गौड़ीय आश्रममें वार्षिक उत्सव।

८ नवम्बर मंगलवार बस द्वारा
(त्रयोदशी) खदीरवन, कोकिलावन, यावट, बैठान, चरण पहाड़ीमें प्रसाद–सेवा।

९ नवम्बर बुधवार
(चतुर्दशी) श्रील भक्तिप्रमोद पुरी गोस्वामी महाराजका तिरोभाव महोत्सव।

१० नवम्बर गुरुवार
(पूर्णिमा) वैष्णव होम, ऊर्जाव्रत समापन।

नमः ॐ विष्णुपादाय राधिकायै प्रियात्मने।
श्रीश्रीमद्भक्तिवेदान्त–नारायणेति नामिने॥१॥

इस भूतलपर अवतीर्ण श्रीमती राधाजीके परमप्रिय निजजन ॐ विष्णुपाद श्रीश्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराजको मैं नमन करता हूँ।

त्रिदण्डिनां भक्तशिरोमणिश्च
श्रीकृष्णपदाब्ज–धृतैक–हृदीः।
चैतन्य–लीलामृत–सारसारं
नारायणं त्वं सततं प्रपद्ये॥२॥

त्रिदण्डि–यतियों और भक्तोंमें शिरोमणि, अपने हृदयमन्दिरमें श्रीश्रीराधाकृष्णके चरणकमलोंको धारण करनेवाले तथा जिनके जीवनका सारसर्वस्व श्रीचैतन्य महाप्रभुका लीलामृत है, ऐसे श्रीश्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराजजीके चरणकमलोंमें मैं निरन्तर प्रपन्न हो रहा हूँ।

व्रज–मण्डल परिक्रमा—२०११

मथुरा परिक्रमा
२ अक्टूबर रविवार से
९ अक्टूबर रविवार तक

वृन्दावनमें परिक्रमा
११ अक्टूबर मङ्गलवार से
२३ अक्टूबर रविवार तक

गोवर्धनमें परिक्रमा
२४ अक्टूबर सोमवार से
१० नवम्बर गुरुवार तक

all photos ©Śāradā dāsī